हिमाचल का पहला ऑनलाइन साप्ताहिक समाचार पत्र

आप का सामना

हक़ीक़त से

हिमाचल प्रदेश, हरियाणा, पंजाब,चंडीगढ़,दिल्ली, में प्रसारित

पोस्टल रजि.नंबर एचपी/33/ एसएमएल (31 दिसंबर 2024 तक मान्य)

वर्ष- 14 अंक-28 शिमला शुक्रवार,26 vi:y l: 02 eb: 2024 आरएनआई एचपीएचआईएन@2010@41180 कुल पृष्ठ-6 मूल्य- 5 रू०

सीडीएस परीक्षा में देश में किया टॉप हिमाचल के रजत कुमार ने

vkd l k dkxMkA हिमाचल प्रदेश के जिला कांगड़ा के उपमंडल शाहपुर के गांव गोरड़ा के रजत कुमार ने संयुक्त रक्षा सेवा (सीडीएस) परीक्षा में देशभर में पहला स्थान हासिल किया है। 3 सितंबर, 2023 को हुई यह परीक्षा रजत ने बिना किसी कोचिंग के पास की है। अभी उनका इंटरव्यू होना है। इस उपलब्धि के चलते सुबह से ही रजत के घर पर बधाई देने वालों का तांता लगा हुआ है।

23 फरवरी, 2002 को माता बेबी और पिता प्रदीप कुमार के घर जन्मे रजत ने अपनी स्कूली परीक्षा केंद्रीय विद्यालय गोहजू से पास की। पिछले साल ही राजकीय महाविद्यालय शाहपुर से 82 फीसदी अंक के साथ बीए की परीक्षा पास कर कॉलेज में टॉप किया था। इसके लिए रजत को स्कॉलरशिप भी मिली थी। रजत के पिता भारतीय डाक सेवा की शाखा भनाला में सेवारत हैं।

रजत ने बताया कि उन्हें सेना में जाने के लिए उनके मौसा लेटिनेंट कर्नल हरि राम ने प्रेरित किया। माता–पिता ने हमेशा पढ़ाई करने में उसका सहयोग किया। वह दो साल पहले हिमाचद्गल प्रदेश पुलिस में कांस्टेबल के पद पर भर्ती भी हुए थे।

उस समय उनकी बीए की पढ़ाई पूरी नहीं हुई थी। इससे पहले एनडीए की परीक्षा भी पास की थी, लेकिन वह इंटरव्यू में असफल रहे। रजत ने बताया कि उन्होंने कभी भी कोचिंग नहीं ली। संवाद

सीडीएस परीक्षा में भराड़ीघाट के नमन ने पाया 14वां रैंक

अर्की उपमंडल की भराड़ीघाट पंचायत के कालर–जेरी गांव के नमन कुमार ने सीडीएस परीक्षा में देश भर में 14वां रैंक हासिल कर नाम रोशन किया है। अब वे भारतीय सेना में लेटिनेंट के पद पर देश की सेवा करेंगे।

नमन कुमार के पिता नरेंद्र कुमार भी भारतीय सेना में सेवाएं दे चुके हैं। माता ममता वर्मा गृहिणी हैं।

नमन ने इस परीक्षा को अपने पहले प्रयास में ही सफलता पाई। 20 वर्षीय नमन ने सफलता का श्रेय माता–पिता समेत परिवारजन को दिया है।

नमन ने यह उपलब्धि बिना किसी विशेष कोचिंग के प्राप्त की है। उन्होंने दृढ़ संकल्प और स्वाध्याय से सफलता हासिल की।

उनकी उपलब्धि से न केवल उनका परिवार बल्कि पूरा गांव और सोलन जिला गौरवान्वित है। उनकी इस सफलता से युवाओं को एक नई प्रेरणा और दिशा मिली है।

उनका यह कदम अन्य युवाओं के लिए एक उदाहरण और प्रेरणा का स्रोत बनेगा।

अमृत कौशल बने जेईई मेन 2024 हिमाचल के टॉपर

vkd l k f'keykA शिमला जेईई मेन 2024 में 56 छात्रों को 100 पर्सेंटाइल मिला है। वहीं, अमृत कौशल हिमाचल प्रदेश के टॉपर रहे हैं। अमृत शिमला के रहने वाले हैं। इनके पिता डॉ. अंकुर और डॉ. सोनिया निजी क्लीनिक चलाते हैं। अमृत कौशल हर रोज छह से सात घंटे पढ़ाई करते हैं। पढ़ाई का तनाव कम लेते हैं। अमृत कंप्यूटर इंजीनियर बनना चाहते हैं। न्यू शिमला के रहने वाले अमृत ने सेंट एडवर्ड स्कूल से दसवीं, जेसीबी न्यू शिमला से 12वीं और जेईई मेन की परीक्षा के लिए एस्पायर अकादमी से कोचिंग ली।

अमृत ने बताया कि बचपन से उनकी रूचि गणित विषय में ज्यादा रही है। सोशल मीडिया के बढ़ते प्रचलन पर अमृत ने कहा कि इसका ज्यादा प्रयोग हानिकारक हो सकता है। सोशल मीडिया का दायरा लगातार बढ़ता जा रहा है। इसे जरूरत के अनुसार की प्रयोग करें। पढ़ाई के साथ अमृत टेबल टेनिस के भी अच्छे खिलाड़ी हैं।

अमृत ने बताया कि वह पढ़ाई का तनाव कम लेते हैं, अगर कभी तनाव होने लगे तो वह टेबल टेनिस खेलकर तनाव को भगाते हैं। वे राज्य स्तरीय टेबल टेनिस प्रतियोगिता भी खेल चुके हैं। उन्होंने बताया कि बड़ी बहन भी कम्प्यूटर इंजीनियर हैं।

अमृत ने अपनी सफलता का श्रेय परि. जनों और अकादमी के अध्यापकों को दिया। अमृत के पिता डॉ अंकुर कौशल ने बताया कि बेटे की बचपन से पढ़ाई में रुचि रही है।

कांग्रेस के मेनिफेस्टो में विदेशी हाथ आता है नजर : अनुराग

vkd l k Åuk A केंद्रीय मंत्री अनुराग ठाकुर ने कांग्रेस के मेनिफेस्टो में विद. ेशी हाथ नजर आने की बात कही है। वह गुरुवार को अंब में चिंतपूर्णी मंडल भाजपा पन्ना प्रमुख सम्मेलन में शामिल हुए। इस मौके पर उन्होंने कहा कि जब पूरी दुनिया में युद्ध की स्थिति है ऐसे में क्या भारत को अपने परमाणु हथियार नष्ट कर देने चाहिए। भारत को कमजोर कर देना चाहिए। राहुल गांधी और कांग्रेस चाहती क्या है। जो परमाणु हथियारों को खत्म करने की बात करते हैं। कांग्रेस के मेनिफेस्टो में विदेशी हाथ नजर आता है।

कोई नक्सली मारा जाता है तो कांग्रेसी उसे शहीद कहते हैं

अनुराग ठाकुर ने कहा कि जब भारत के पहले सीडीएस विपिन रावत शहीद हुए। तब कांग्रेस ने अपशब्द कहे। जब कोई नक्सल मारा जाता है तो उसे वह शहीद कहते हैं। देश पर इमरज. ेंसी थोपकर इंदिरा गांधी ने लोकतंत्र को कुचलने का प्रयास किया था। उन्होंने कांग्रेस पर दलितों को राजनी. ति के नाप पर बरगलाने का आरोप लगाते हुए कहा कि दलित वर्ग के वोट तो कांग्रेस अपना मानती है, लेकिन संविधान निर्माता बाबा साहेब भीमराव अंबेडकर को उन्होंने चुनाव हरवाया। उन्हें पीड़ित और लज्जित किया, क्योंकि वह अनुसूचित जाति से थे।

कांग्रेस का बस चले तो राम मंदिर की जगह बनवा दे मस्जिद

कांग्रेस ने अपने परिवार के लोगों को भारत रत्न दिया। बाबा साहेब को नहीं दिया। विश्वनाथ प्रताप सिंह सरकार ने बाद में उन्हें भारत रत्न दिया। मोदी सरकार ने बाबा साहेब के जन्म भूमि, शिक्षा भूमि और महापरिनिर्वाण भूमि सहित पंच तीर्थ पर उनके म्यूजियम बनवाए। भाजपा ने संविधान दिवस पर राष्ट्रीय अवकाश घोषित किया।

नेहरू इंदिरा के वक्त चीन ने अक्साई चिन पर कब्जा किया और पाक अधि. त कश्मीर बना।

जब भारत के पास पाकिस्तान के नब्बे हजार सैनिक बंदी थे। उन्होंने कहा कि देश में शायद ही कोई व्यक्ति हो जिसकी राम मंदिर बनने पर आंख नम ना हुई हो। कांग्रेस का बस चले तो वह राम मंदिर छुड़वा कर वहां मस्जिद बना दे।

कांग्रेस का हाथ लोगों की जेबों तक पहुंचा

अनुराग ठाकुर ने कहा बाबरी मस्जिद के लिए जहां स्थान दिया गया है। उसे वहां बनाया जाना चाहिए।

उसे लेकर हमारा कोई विरोध नहीं है। उन्होंने कहा कि कांग्रेस अब मरने के बाद भी वसूली टैक्स बरामद करना चाहती है। कांग्रेस का हाथ लोगों की जेबों तक पहुंच गया है।

वह कहते हैं कि हम सबकी संपत्ति का सर्वे करवाएंगे और गहने, मकान, संपत्ति की जांच कर जिसके पास भी ज्यादा संपत्ति है। उसे लेकर अन्य को दे देंगे।

अनुराग ठाकुर के संबोधन से पूर्व जिला भाजपा अध्यक्ष बलबीर सिंह ने भी पन्ना प्रमुखों को संबोधित किया।

हिमाचल में सेब पैकिंग को इस सीजन से यूनिवर्सल कार्टन अनिवार्य नोटिफिकेशन जारी

vkd l k f'keykA हिमाचल प्रदेश में सेब की पैकिंग के लिए यूनिवर्सल कार्टन (फिक्स) अनिवार्य कर दिया गया है। कृषि विभाग ने इसे लेकर बुधवार को नोटिफिकेशन जारी कर दी है। इसी के साथ पांच दशक से पैकिंग को इस्तेमाल हो रहे टेलिस्कोपिक कार्टन पर प्रतिबंध लग गया है।

सेब उत्पादक संघ के बैनर तले बाग. वानों के लंबे संघर्ष के बाद उनकी सालों पुरानी यह मांग पूरी हुई है। अब बागवान पहले की तरह अपनी मर्जी से पांच से ज्यादा ट्रे प्रति पेटी नहीं भर पाएंगे। पूर्व में कुछ बागवान आढ़तियों व लदानियों के दबाव में प्रति पेटी 8 ट्रे तक सेब भर देते थे और प्रत्येक पेटी का वजन 30 से 40 किलो तक पहुंच जाता था, जबकि दाम उन्हें औसत 20 से 25 किलो की पेटी मान कर दिए जाते थे।

सेब की पैकिंग को पैरामीटर तय

स्टेक होल्डर से चर्चा के बाद सरकार ने सेब पैकिंग के पैरामीटर तय किए है। यूनिवर्सल कार्टन लागू होने के बाद अब एक्स्ट्रा लार्ज साइज के सेब के प्रति ट्रे 20 दाने भरे जाएंगे और 4 ट्रे में कुल 80 दाने होंगे। इसका वजन 20 किलो बनेगा। इसी तरह लार्ज साइज के सेब के प्रति ट्रे 20 दाने भरे जाएंगे, लेकिन इसमें पांच ट्रे प्रति पेटी होगी। इसका वजन भी 20 किलो ही होगा। मीडियम साइज के पेटी में 125 दाने सेब भरे जाएंगे

मीडियम साइज सेब के प्रति ट्रे 25 दाने और 5 ट्रे में 125 दाने भरे जाएंगे। इसका वजन 20 किलो 125 ग्राम के आसपास होगा। स्मॉल साइज सेब के 30 दाने प्रति ट्रे और 5 ट्रे में 150 सेब के दाने भरे जाएंगे। इसका वजन 20.025 किलोग्राम के आसपास होगा। ऐक्स्ट्रा स्मॉल सेब के प्रति ट्रे 35 दाने और 5 ट्रे में 175 दाने सेब भरे जाएंगे। इसका वजन 20.075 किलोग्राम होगा।

हिमाचल के बागवानी मंत्री जगत सिंह नेगी ने विधानसभा के बीते साल मानसून सत्र में ही यूनिवर्सल कार्टन अनिवार्य करने का ऐलान कर दिया था। सारी औपचारिकताएं पूरी करने के बाद अब जाकर नोटिफिकेशन जारी कर दी गई है।

टेलीस्कोपिक से कैसे अलग यूनिवर्सल कार्टन

दरअसल, यूनिवर्सल कार्टन में सिर्फ 20 किलो सेब ही भरा जा सकता है, जबकि टेलिस्कोपिक में बागवान 25 से 40 किलो तक सेब भरने लगे थे। बागवानों को दाम औसत 20 से 25 किलो के हिसाब से दिए जाते हैं। इस तरह प्रति पेटी बागवान 5 से 15 किलो अतिरिक्त सेब दे रहे थे।

इस लिहाज से बागवानों को प्रति पेटी कई बार 200 से 700 रुपए तक का नुकसान उठाना पड़ता है। इसका फायदा लदानी और उठा जाते हैं, जो हिमाचल में खरीदे गए सेब को देश के बाजारों में किलो के हिसाब से बेचकर मोटा मुनाफा कमाते हैं।

यह है सेब पैकिंग का इंटरनेशनल स्टैंडर्ड

दुनियाभर में सेब 4 लेयर में भरा जाता है। यह सेब पैकिंग का अंतरराष्ट्रीय स्टैंडर्ड है। दुनिया के किसी भी मुल्क से भारत में सेब आयात किया जाता है तो भी किलो के हिसाब से खरीदा जाता है, लेकिन हिमाचल में बागवान टेलिस्कोपिक कार्टन में 6 से 8 तह में सेब भर रहे हैं। कुछ बागवान ऐसा कमीशन एजेंट के दबाव में आकर तो कुछ सबसे महंगा सेब बिकने की चाहत में कर रहे हैं।

वीरभद्र सरकार 2 बार लाई थी विधेयक

पूर्व वीरभद्र सिंह सरकार ने भी यूनिवर्सल कार्टन को लेकर 2 बार विधेयक पेश किया, लेकिन बिना तैयारियों के लाया गया विधेयक बाग. वानों के विरोध के बाद वापस लेना पड़ा। उस दौरान यूनिवर्सल कार्टन तो अनिवार्य कर दिया गया, मगर बाजार में इसकी उपलब्धता नहीं कराई गई। कार्टन बनाने वाली कंपनियों से पहले संपर्क नहीं साधा गया। हालांकि यूनिवर्सल कार्टन इस्तेमाल न करने वाले बागवानों को पैनल्टी लगाने इत्यादि का प्रावधान अध्यादेश में कर लिया गया था।

युवती को तेजधार हथियार से काटा नंबर ब्लॉक करने पर

vkdlk ikyeijA प्रदेश के कागंड़ा जिले के पालमपुर बस अड्डे में दराट से हमला करने वाला आरोपी लड़की के प्यार में अंधा था। लड़की ने 15–20 दिन पहले आरोपी सुमित चौधरी का मोबाइल नंबर ब्लॉक कर दिया था। पीड़ित युवती आरोपी से पिछले कुछ दिनों से बात नहीं कर रही थी। इस बात से नाराज आरोपी अपना आपा खो बैठा और शनिवार को युवती पर दराट से 8 से 10 बार हमला किया। यह बात आरोपी ने खुद पुलिस को पूछताछ के दौरान बताई है।

पुलिस की अब तक की जांच और आरोपी से पूछताछ में पता चला कि 6 साल पहले वह अपने रिश्तेदार की शादी में गया था। जहां पर उसने युवती को देखा था। जहां दोनों की जान–पहचान हुई। तब से दोनों के बीच फोन पर बातचीत होती थी। 3 साल पहले आरोपी सुमित चौधरी को पता चला कि लड़की किसी ओर युवक से बात करती है।

इस बात पर दोनों के बीच झगड़ा होने लगा। यह देख 15–20 दिन पहले लड़की ने उसका नंबर ब्लॉक कर दिया। इससे आरोपी ने तिलमिला गया और 20 अप्रैल को लड़की पर दिनदहाड़े पालमपुर बस अड्डे में हमला कर दिया। बाद में हमले का वीडियो भी सामने आया, जिसमें आरोपी को लड़की पर बार–बार हमला करते हुए देखा जा सकता है। बाद में मौके पर मौजूद लोग युवती को बचाते हुए आरोपी की पिटाई करते हैं।

हालांकि आरोपी के बयानों में कितनी सच्चाई है, यह जानने के लिए पुलिस लड़की के ठीक होने का इंतजार कर रही है। घायल युवती को अस्पताल पहुंचाने में मदद करने वाली प्रियंका ने कहा– लोग मौके पर वीडियो बना रहे थे। किसी की इतनी हिम्मत नहीं थी लड़की को अस्पताल पहुंचाए। इसके बाद उन्होंने एक अंकल के साथ मिलकर घायल लड़की को स्कूटी पर अस्पताल पहुंचाया। प्रियंका ने कहा– यदि लड़की कुछ और देर मौके पर रहती तो वह मर जाती।

चंडीगढ़ में युवती की हालत में हो रहा सुधार

दराट के हमले से युवती गंभीर रूप से घायल हो गई। स्थानीय लोगों की मदद से पीड़िता को पहले सिविल अस्पताल पालमपुर और फिर टांडा अस्पताल रेफर किया गया। टांडा से उसे पीजीआई चंडीगढ़ रेफर किया गया, जहां पीड़िता की हालत में सुधार बताया जा रहा है। उसकी जान अब खतरे से बाहर बताई जा रही है।

हमले में इस्तेमाल दराट जब्त

वहीं पालमपुर पुलिस ने धारा 307, 326, 323, 341 के तहत मुकद्दमा दर्ज कर आगामी कार्रवाई कर रही है। इस वारदात में छात्रा को हाथ, बाजू, सिर और गर्दन पर गंभीर चोटें आयी हैं। पुलिस ने हमले में इस्तेमाल दराट को जब्त कर दिया है और साक्ष्य जुटाए जा रहे हैं।

आरोपी नगरोटा के मसल गांव का रहने वाला है। वह मल्टी टॉस्क वर्कर के तौर पर कार्यरत था, जबकि युवती पढ़ाई कर रही है।

लड़की से शादी करना चाहता था आरोपी

कांगड़ा एसपी शालिनी अग्निहोत्री ने बताया कि आरोपी ने बार–बार लड़की पर अटैक किया है। आरोपी की स्टेटमेंट के हिसाब से पीड़िता और आरोपी पांच–छह साल से परिचित है। मगर कुछ समय से लड़की उससे बात नहीं कर रही थी। आरोपी लड़की से शादी करना चाहता था। लड़की के मना करने पर आरोपी ने लड़की पर अटैक कर दिया।

पुलिस बोली– लड़की के बारे में सोशल मीडिया पर अफवाह न फैलाएं

पुलिस ने लोगों से अपील की है कि पीड़िता की हालत में सुधार हो रहा है। इसलिए सोशल मीडिया पर लड़की की तबीयत को लेकर कोई अफवाह न फैलाई जाए। सोशल मीडिया पर अफवाह फैलाने वालों पर साइबर सेल नजर बनाए हुए है। ऐसे लोगों पर कार्रवाई की जाएगी। वहीं इस घटना से क्षेत्र के लोगों में दहशत का माहौल है। स्थानीय लोगों ने पालमपुर पुलिस थाने के बाहर चार घंटे प्रदर्शन किया और आरोपी को कड़ी सजा देने की मांग की।

मुख्यमंत्री सुक्खू युवती के परिजनों से मिले

वहीं हिमाचल के मुख्यमंत्री सुखविंदर सिंह सुक्खू घायल युवती के परिजनों से मिलने उनके गांव पहुंचे। इस दौरान उन्होंने कहा कि युवती के उपचार का जो भी खर्च आएगा, उसे सरकार उठाएगी। भविष्य में ऐसी घटनाएं न हों, यह सुनिश्चित बनाया जाएगा और दोषी को सख्त सजा दिलाई जाएगी।

हिमाचल में हिमकेयर–आयुष्मान पर संकट 300 करोड़ पेमेंट पेंडिंग

vkdlk f'keykA हिमाचल प्रदेश में लोगों की मुत इलाज की योजना हिमकेयर और आयुष्मान पर संकट मंडरा रहा है। आर्थिक संकट से जूझ रही राज्य सरकार मुत इलाज और निशुल्क दवाइयों की पेमेंट रिलीज नहीं कर पा रही। इससे मरीज दर–दर की ठोकने खाने को मजबूर हो गए है। सरकार के पास लगभग 300 करोड़ रुपए की पेमेंट पेंडिंग हो गई है।

आयुष्मान और हिमकेयर कार्ड के ज्यादातर अस्पताल में होने वाली मुत सर्जरी रोक दी गई है। जन औषधि केंद्रों में मरीजों को मुत दवाइयां नहीं मिल रही। मरीज ओपन मार्केट से दवाइयां खरीदने को मजबूर हो गए हैं। आईजीएमसी सहित प्रदेश के दूसरे हॉस्पीटल में हिमकेयर व आयुष्मान काउंटर बंद करने की नौबत आ गई है।

ओपन मार्केट से स्टंट व पेसमेकर खरीद रहे मरीज

मरीजों व उनके तीमारदारों को स्टंट और पेसमेकर जैसे महंगे उपकरण ओपन मार्केट से महंगे दाम पर खरी. दने पड़ रहे हैं। प्रदेश के आईजीएमसी में हिमकेयर व आयुष्मान योजना के तहत मुत उपचार को मरीज नहीं लिए जा रहे।

ड्रग सप्लायर ने दवाइयों की सप्लाई बंद की

जन औषधि केंद्रों को मुत दवाइयां सप्लाई करने वाले ज्यादातर ड्रग सप्लायर ने आपूर्ति बंद कर दी है। प्रदेश में पिछले 10 से 12 महीने से अधिक समय से मुत इलाज और निशुल्क दवाइयों के लिए बजट नहीं दिया जा रहा। बीते 31 मार्च को जरूर कुछ पेमेंट जारी की गई, लेकिन वह ऊंट के मुंह में जीरा थी। मरीजों के साथ साथ ड्रग सप्लायर भी कई बार पेमेंट रिलीज करने का आग्रह कर चुके हैं। अस्पताल प्रबंधन भी बार–बार सरकार से पत्राचार कर रहे हैं। चिंता इस बात की है कि सरकार चुनाव में है। इससे पेमेंट के भुगतान में देरी हो रही है।

हिमाचल में 5 लाख आयुष्मान व हिमकेयर कार्ड

प्रदेश में आयुष्मान और हिमकेयर योजना के तहत लगभग 5 लाख कार्ड बने है। इसके तहत प्रत्येक मरीज का सरकारी अस्पताल में पांच लाख रुपए तक का उपचार मुत होता है। हिमकेयर राज्य की अपनी स्कीम है, जबकि आयुष्मान केंद्र सरकार की योजना है। मगर आयुष्मान में 50–50 फीसदी के अनुपात में केंद्र व राज्य सरकार खर्च उठाती है। राज्य सरकार आयुष्मान का भी बजट नहीं दे पा रही है।

पेमेंट के बाद शुरू करेंगे सप्लाई : जैन

शिमला कैमिस्ट्स एंड ड्रगिस्ट्स एसोसिएशन के सचिव अनुज जैन ने बताया कि 31 मार्च को पांच–पांच लाख की पेमेंट जरूर मिली थी। बाकी पेमेंट पेंडिंग है। जब तक बकाया राशि का भुगतान नहीं कर दिया जाता, तब तक दवाइयों की सप्लाई संभव नहीं है।

जल्द पेमेंट मिलने की उम्मीद

आईजीएमसी के वरिष्ठ चिकित्सा अधीक्षक डॉ. राहुल राव ने कहा कि मुख्यमंत्री और उच्च अधिकारियों से बात हो गई है।

जल्द हिमकेयर और आयुष्मान की पेमेंट मिल जाएगी। वहीं सेहत सचिव सी पालरासू ने बताया कि जल्द हिमकेयर की पेमेंट रिलीज कर दी जाएगी।

हिमाचल में पंजाब के गुंडों का डर दिखा नाबालिग लड़की से रेप आरोपी ने विरोध करने पर अश्लील फोटो–वीडियो वायरल किए

vkdlk ÅukA हिमाचल प्रदेश में ऊना जिले के उप–मंडल अंब में एक नाबालिग लड़की को डरा–धमकाकर उसके साथ रेप की घटना सामने आई है। मूल रूप से पंजाब का रहने वाला आरोपी युवक उसके साथ 3 साल तक रेप करता रहा।

अब जब लड़की ने और प्रताडऩा रहने से इनकार किया तो आरोपी उसकी कुछ अश्लील तस्वीरें और वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल करने की धमकी दे रहा था। जब इस बात का खुलासा हुआ तो नाबालिग की मां ने महिला थाने में शिकायत दर्ज करवाई है।

सिलाई करती है पीड़िता की मां, आसपास ही काम करता है आरोपी

अंब महिला थाने में दी शिकायत में पीड़िता की मां ने बताया कि वह अंब बाजार में सिलाई का काम कर परिवार का भरण–पोषण करती है। उसकी बेटी भी उसके काम में हाथ बंटाती है। महिला ने बताया कि आरा. `पी युवक प्रिंस निवासी गांव सिपरी (हाजीपुर) मुकेरियां जिला होशियारपुर (पंजाब) भी उसकी दुकान के आसपास काम करता था।

इसी के चलते उसने उसकी बेटी से पहचान बना ली। महिला ने बताया कि 20 अप्रैल को उसकी बेटी स्वयं को कमरे में बंद कर रो रही थी। पूछने पर लड़की ने बताया कि आरा. `पी ने उसके साथ रेप करते खींची अश्लील फोटो इंस्टाग्राम पर डाल दी हैं।

आरोपी के खिलाफ ऊना महिला थाना में मामला दर्ज हुआ है।

पंजाब के गुंडों की धमकी देकर नाबा. लिग को डराया

महिला द्वारा दी गई शिकायत के अनुसार, लड़की ने घटना के बारे में विस्तार से बताया। उसने कहा कि करीब 3 साल पहले प्रिंस उसकी दुकान में मां की गैरहाजिरी में आया था। उस दौरान उसने लड़की के साथ यौन संबंध बनाने की जिद की। जब लड़की नहीं मानी तो उसने कुछ डरावने वीडियो लड़की को दिखाए और कहा कि पंजाब में गुंडे इसी तरह लोगों को खत्म कर देते हैं।

उसने बताया था कि उसकी भी गुंडों से बहुत पहचान है। वह उन्हें अंब बुलाकर लड़की के परिवार को खत्म करवा देगा। यदि परिवार और स्वंय को बचाना है तो शारीरिक संबंध बना ले।

उस दिन के बाद 3 वर्षों में आरोपी ने कई बार नाबालिग को बंदूकों और चाकुओं की तस्वीरें दिखाकर उसका रेप किया। उससे हजारों रुपए भी लिए।

पीड़िता की मां का आरोप है कि उसकी बेटी मानसिक पीड़ा से गुजर रही है। उसे डर है कि वह कहीं आत्महत्या न कर ले।

महिला थाना ऊना के कार्यकारी प्रभारी सुनील कुमार ने बताया है कि महिला द्वारा दी गई शिकायत के बाद मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

नग्न अवस्था में मिला युवती का शव जराशी गांव के नर्सरी नाले में, हत्या की आशंका

vkdlk jkeiqj c'kgjA रामपुर उपमंडल के अंतर्गत नरैण पंचायत के तहत जराशी गांव के नर्सरी नाले में एक युवती का नग्न अवस्था में शव बरामद हुआ है। इससे पूरे क्षेत्र में सनसनी फैल गई हैं। हालांकि मौत के कारणों का पता पोस्टमार्टम रिपोर्ट के बाद ही चल पाएगा लेकिन नग्न अवस्था में शव मिलने से हत्या की आशंका भी जताई जा रही है। मामले की संवेदनशीलता को देखते हुए फॉरेंसिक साइंस के विशेषज्ञ भी मौके पर पहुंचकर साक्ष्यों को जुटाने में लगे हैं। पुलिस ने मामले की छानबीन शुरू कर दी है। शव की शिनाख्त अभी तक नहीं हो पाई है। पुलिस से मिली जानकारी के अनुसार नेपाली मूल का एक व्यक्ति बुधवार को जराशी गांव के साथ लगते जंगल में गुच्छी खोज रहा था। इस दौरान उसे सड़क के साथ पेड़ में किन्नौरी शॉल फंसी हुई नजर आई। नेपाली शॉल देखने के लिए नजदीक गया तो यहां से करीब सौ फीट नीचे युवती का नग्न शव दिखा। व्यक्ति ने फौरन मामले की सूचना नरैन पंचायत के उपप्रधान अविनाश कायस्थ को फोन पर दी। इसके बाद पंचायत प्रधान शिवराम और उपप्रधान अविनाश कायस्थ ने मामले की सूचना पुलिस को दी। घटना की जानकारी मिलते ही पुलिस की टीम मौके के लिए रवाना हुई और शव कब्जे में लिया। वीरवार को शिमला से फॉरेंसिक टीम भी मौके पर पहुंच गई और बारीकी से साक्ष्यों को जुटा रही है। युवती के गले की चेन साथ में ही पड़ी थी जबकि कानों में बालियां और हाथ में घड़ी और चांदी का कड़ा भी बरामद किया गया है। पुलिस के लिए मुश्किल इस बात की है कि युवती कहां की रहने वाली है, इसका अभी तक कोई सुराग नहीं लग पाया है। आसपास के क्षेत्र से अभी तक की सूचना के अनुसार कोई युवती लापता नहीं है। नरैन पंचायत के उपप्रधान अविनाश कायस्थ ने बताया कि युवती की उम्र 30 साल के आसपास हो सकती है और शरीर काफी भारी है। उन्होंने बताया कि आसपास के इलाकों में गुमशुदगी के बारे में जानकारी जुटाई जा रही है, लेकिन अभी तक कहीं से भी युवती के लापता होने की सूचना नहीं मिली है। हालांकि जिन परिस्थितियों में युवती का शव बरामद किया गया है, उससे हत्या की आशंका से भी इन्कार नहीं किया जा सकता है। इसको देखते हुए पुलिस हर पहलू की गहनता से पड़ताल कर रही है।

पुलिस के मुताबिक पोस्टमार्टम रिपोर्ट और फॉरेसिंक विशेषज्ञों की ओर से एकत्रित किए गए साक्ष्यों की जांच के बाद ही वह किसी नतीजे पर पहुंच सकती है।

द रिट्रीट,पांच दिन पर्यटकों के लिए बंद रहेगा शहर में नहीं चलेंगे भारी वाहन

vkdlk f'keyk A राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू का हिमाचल प्रदेश की राजधानी शिमला आने का कार्यक्रम फाइनल हो गया है। 4 से 8 मई तक राष्ट्रपति शिमला से सटे मशोबरा स्थित राष्ट्रपति निवास द रिट्रीट में रुकेंगी। प्रस्तावित दौरे की तैयारियों को लेकर बैठक में जिला दंडाधिकारी अनुपम कश्यप ने अधिकारियों को जरूरी निर्देश दिए। राष्ट्रपति के पांच दिवसीय दौरे के दौरान द रिट्रीट आम जनता और पर्यटकों के लिए बंद रहेगा। डीसी अनुपम कश्यप ने बताया कि राष्ट्रपति 4 मई को दिल्ली से शिमला पहुंचेंगी। 6 को केंद्रीय विवि धर्मशाला के दीक्षांत समारोह में शामिल होंगी। 8 मई को सुबह शिमला से दिल्ली के लिए रवाना होंगी।

दलित वोट बैंक के इर्द-गिर्द घूमते है पंजाब के सियासी समीकरण, कभी एक पार्टी से नहीं बंधे

pMhx<A पंजाब में दलितों की आबादी ज्यादा होने की वजह से राज्य के चुनावी समीकरणों पर भी इसका असर देखने को मिलता है। दलित वोटर पंजाब में एक ही पार्टी से बंधे नहीं रहे हैं। यही वजह है कि वोटर कभी अकाली दल तो कभी कांग्रेस और आप की तरफ स्विंग होते रहे हैं। दोआबा में दलितों का खासा जनाधार है और यहां पर कई क्षेत्रों में वोट 45 फीसदी तक है। कुल मिलाकर दलित आबादी पंजाब में काफी सीटों पर जीत हार का फैसला करती है।

2017 विधानसभा चुनाव की बात करें तो कुल 34 आरक्षित सीटों में से 21 कांग्रेस ने जीती थीं, जबकि नौ सीटें आम आदमी पार्टी ने जीती थीं। वहीं चार सीटें अकाली–बीजेपी गठबंधन के हिस्से में गई थीं। ऐसा नहीं है कि दलित किसी खास इलाके तक ही सीमित हैं। इनकी मौजूदगी माझा दोआबा व मालवा के क्षेत्रों में अच्छी खासी है। 13 विधानसभा क्षेत्रों में मजहबी समुदाय के लोगों की आबादी 25 फीसदी से ज्यादा हैं। उसी तरह से रविदासिया की आबादी 15 विधानसभा क्षेत्रों में 35 फीसदी से ज्यादा है। पंजाब की राजनीति इस बात की गवाह रही है कि दलितों का समूचा वोट कभी भी किसी एक पार्टी को नहीं पड़ा है। इसके कई कारण हैं।

39 जातियों में बंटा दलित भाईचारा

पंजाब में दलित भाईचारा 39 जातियों में बंटा हुआ है। उनके आपसी हित भी टकराते हैं। पंजाब में दलितों की मुख्य जातियों में रामदासिया, रविदास समाज, मजहबी व मजहबी सिख, वाल्मीकि समाज, भगत अथवा कबीरपंथी प्रमुख हैं। 1996 के लोकसभा चुनाव में भी शिरोमणि अकाली दल ने बसपा के साथ गठबंधन किया था। अकाली–बसपा गठबंधन ने पंजाब की कुल 13 सीटों में से 11 सीटें जीती थीं। शिरोमणि अकाली दल के हिस्से आठ, जबकि बसपा के हिस्से तीन सीटें आई थीं। इनमें से होशियारपुर सीट से बसपा के संस्थापक कांशीराम विजयी हुए थे, फिरोजपुर से मोहन सिंह और फिल्लौर से हरभजन सिंह लाखा ने अपनी सीटें जीत कर बसपा की झोली में डालीं। उस चुनाव में कांग्रेस को सिर्फ दो सीटें मिली थीं। दलितों का झुकाव 1996 के बाद से अचानक तेजी से अलग अलग पार्टियों की तरफ हुआ है। हालांकि उससे पहले दलितों का ज्यादातर वोट कांग्रेस की तरफ जाता था। 1992 में जब अकाली दल ने विधानसभा चुनाव का बायकॉट किया था, तो भी कांग्रेस रिजर्व 29 में से 20 1997 में अकाली–भाजपा गठबंधन की तरफ खिसका वोट

1997 के चुनावों में दलितों का वोट अकाली–भाजपा गठबंधन की तरफ खिसकना शुरू हुआ। 1997 में भाजपा ने चार रिजर्व सीटों पर चुनाव जीता था। महत्वपूर्ण बात यह थी कि भाजपा चार ही रिजर्व सीटों पर लड़ी थी और सभी सीटों पर मुकाबला कांग्रेस के साथ था। दीनानगर, नरोट मेहरा, जालंधर साउथ और फगवाड़ा सीटों पर भाजपा ने कांग्रेस को करारी शिकस्त दी थी, जबकि अगले चुनाव में कांग्रेस का दलित सीटों पर सूपड़ा साफ हो गया था। 2002 में तो दलितों ने आप पर भी पूरा भरोसा जताया और 34 में से 26 आरक्षित सीटों पर बंपर जीत दिलायी। कांग्रेस के दलित सीएम चरणजीत चन्नी दोनों सीटों से हार गए। आप की तरफ दलितों का वोट शिट हो गया।

यूएन ने दो दिन अम्बेडकर जयंती का जश्न मनाया कार्यक्रम में भारतीय राजदूत रहे अनुपस्थित!

ub: fnYyhA संयुक्त राष्ट्र संघ (यूएन) ने पहली बार न्यूयॉर्क में अपने मुख्यालय में 18 अप्रैल और 23 अप्रैल को डॉ. बी आर अंबेडकर की 133वीं जयंती धूमधाम से मनाई। ऐसा पहली बार हुआ है कि यूएन ने किसी नेता की याद में दो दिन समर्पित किए है। हैरानी की बात यह है कि इस कार्यक्रम में भारत के राजदूत (संयुक्त राज्य अमेरिका में) अनुपस्थित थे। उनकी अनुपस्थिति के पीछे का कारण भारत में चल रहे आम चुनाव बताया गया। हालांकि, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कार्यक्रम के आयोजक दिलीप म्हास्के को बधाई दी।

एक प्रेस बयान के मुताबिक, फाउंडेशन फॉर ह्यूमन होराइजन द्वारा आयोजित इस कार्यक्रम में 195 देशों के नेताओं और प्रतिनिधियों ने हिस्सा लिया।

प्रतिभागियों ने दो विषयों पर चर्चा की – आदिवासी युवाओं को पर्वतीय क्षेत्र के अनुकूल कृषि तकनीकी में दक्ष बनाना और सतत विकास के लिए युवाओं के अनुकूल लक्ष्यों को निर्धारित करना विषय पर चर्चा हुई। इसके आधार पर सितंबर में संयुक्त राष्ट्र महासभा में प्रस्तुत करने के लिए दो नीति पत्र तैयार किए गए।

जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय के सेंटर फॉर पॉलिटिकल स्टडीज, स्कूल ऑफ सोशल साइंसेज के सहायक प्रोफेसर हरीश एस. वानखेड़े के अनुसार, डॉ. अंबेडकर को इस वर्ष देश और विदेश में एक नायक और ऊंचे आदर्शों के समर्थक के रूप में गर्व से याद किया गया है।

उनके अनुसार, देश में दक्षिणपंथी समूहों ने भी बाबासाहेब को एक हिंदू समाज सुधारक के रूप में अपनाने का प्रयास किया है और उन्हें हिंदू सांस्कृतिक विविधता की महत्वपूर्ण कड़ी के रूप में स्वीकार किया है।

उनका कहना है कि वामपंथी–उदारवादी विद्वान अंबेडकर को एक राष्ट्रवादी नेता के रूप में चित्रित करते हैं और उनके महत्वपूर्ण प्रभाव को भव्य दर्शन या बौद्धिक विरासत के संदर्भ में रखना चाहते हैं। वानखेड़े कहते हैं, एक व्यापक इच्छा है कि डॉ. अंबेडकर को एक महान विचारक का दर्जा दिया जाए या उन्हें प्रतिबंधात्मक दलित पहचान से मुक्त करने के लिए सार्वभौमिक दर्शन के क्षेत्र में शामिल किया जाए।

शिक्षाविद का कहना है कि अंबेडकर सामाजिक न्याय की राजनीति में एक शक्तिशाली आवाज या दलित नेता से कहीं अधिक थे।

वह निस्संदेह ऐसे वर्गीकरणों से ऊपर थे क्योंकि मार्क्सवादी–समाजवादी सिद्धांतों के साथ उनका आलोचनात्मक जुड़ाव महत्वपूर्ण है और उन्होंने महत्वपूर्ण श्रमिक वर्ग के मुद्दों पर सराहनीय काम किया है।

उन्होंने मातृत्व अवकाश, समान वेतन और आठ घंटे के कार्यदिवस की मांगों के जवाब में वायसराय की परिषद में श्रम मंत्री के रूप में श्रमिक वर्गों को कई विशेषाधिकार प्रदान किए।

इसके अलावा, भारत में महिला मुक्ति की लड़ाई को बढ़ावा देने में उनकी सेवाओं को अत्यधिक महत्व दिया जाता है।

कम से कम उल्लेख करने योग्य बात यह है कि एक संविधानवादी अम्बेडकर ने भारत को एक समकाल. ीन लोकतांत्रिक गणराज्य के रूप में स्थापित करने के लिए अपने असाधारण आकर्षण और राजनीतिक कौशल का उपयोग किया। चूंकि वह एक जैविक बुद्धिजीवी हैं, इसलिए नागरिकता, स्वतंत्रता, समानता और न्याय जैसे महत्वपूर्ण राजनीतिक विच. ारों को समझने के लिए उनके . दृष्टिकोण आवश्यक हैं।

प्रस्तावित प्रस्ताव पर विवाद की संभावना कम है क्योंकि यह आकर्षक है।

हालाँकि, एक चिंता भी है – जो अपरिहार्य है।

एक राजनीतिक दार्शनिक या राष्ट्रीय नायक के रूप में अंबेडकर की स्थिति के बारे में चर्चा अक्सर उन प्रमुख सामाजिक और राजनीतिक कारणों से दूर हो जाती है, जिनका उन्होंने अपने पूरे जीवनकाल में समर्थन किया।

उनकी राजनीतिक और बौद्धिक छवि दलितों को अस्पृश्यता के चंगुल से मुक्त कराने की उनकी लड़ाई और दमनकारी ब्राह्मणवादी जाति व्यवस्था के विरोध से बनी है।

वह मानक दर्शन, राष्ट्र–निर्माण और संवैधानिकता की चिंताओं को भी पार करते हुए, जाति समाज की कठोर वास्तविकताओं को सुधारने और इसे एक बेहतर मानव दुनिया में बदलने के लिए गहराई से प्रतिबद्ध थे।

इसलिए, प्रोफेसर के अनुसार, जाति और अस्पृश्यता के केंद्रीय मुद्दों को नजरअंदाज करके अंबेडकर को एक अमूर्त राष्ट्रीय नायक के रूप में मनाना उनके और उनके कार्यों के प्रति अपमानजनक होगा।

दलित पीएचडी स्कॉलर के निलम्बन पर बोले छात्र अभिव्यक्ति की आजादी का हनन कर रहा टीआईएसएस

ub: fnYyhA टाटा इंस्टीट्यूट ऑफ सोशल साइंसेज (टीआईएसएस) मुंबई द्वारा दलित पीएचडी स्कॉलर को निलंबित करने से छात्र समुदाय में आक्रोश है।

स्टूडेंट्स फेडरेशन ऑफ इंडिया (एसएफआई) की केंद्रीय कार्यकारी समिति सदस्य और एसएफआई महाराष्ट्र के संयुक्त सचिव रामदास शिवानंदन को जनआंदोलनों में भाग लेने और प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी शासन से सवाल पूछने पर गत 18 अप्रैल को दो साल के लिए निलम्बित कर दिया गया।

अंग्रेजी अखबार द इंडियन एक्सप्रेस की एक रिपोर्ट के मुताबिक छात्र के निलंबन पर प्रोग्रेसिव स्टूडेंट्स फोरम (पीएसएफ) ने आरोप लगाया कि संस्थान का यह निर्णय एक विरोध मार्च में छात्र की भागीदारी से जुड़ा है। फोरम का आरोप है कि केंद्र सरकार की कथित छात्र विरोधी नीतियों के खिलाफ उसने जनवरी में दिल्ली में विरोध प्रदर्शन किया था जिसके कारण संस्थान ने यह कदम उठाया है। वहीं, संस्थान ने कहा है कि जिस छात्र को निलंबित किया गया है उसने छात्रों के लिए बनाई गई अनुशासन संहिता का गंभीर उल्लंघन किया है।

रिपोर्ट कहती है कि 18 अप्रैल को जारी निलंबन आदेश में छात्र रामदास प्रिंसी शिवानंदन को टिस यानी टाटा इंस्टीट्यूट ऑफ सोशल साइंस के सभी परिसरों से प्रतिबंधित कर दिया गया है। इसमें छात्र रामदास को संबो. धित करते हुए संस्थान ने कहा है कि आपको भेजे नोटिस के बाद गठित एक समिति ने 17 अप्रैल को अपनी सिफारिशें प्रस्तुत कीं। समिति ने आपके दो साल के निलंबन की सिफारिश की है।

आदेश में लिखा है कि दो साल के लिए और टाटा इंस्टीट्यूट ऑफ सोशल साइंस के सभी परिसरों में आपका प्रवेश वर्जित कर दिया जाएगा।

रामदास को संबोधित इस निलंबन आदेश में कहा गया है कि सिफारिशों को सक्षम प्राधिकारी द्वारा स्वीकार कर लिया गया है।

इससे पहले 7 मार्च को जारी नोटिस में कहा गया था कि छात्र रामदास ने पीएसएफ–टीआईएसएस के बैनर तले विरोध प्रदर्शन में भाग लेकर संस्थान के नाम का दुरुपयोग किया है। नोटिस के अनुसार, चूंकि पीएसएफ संस्थान का मान्यता प्राप्त छात्र निकाय नहीं है, इसलिए रामदास ने नाम का उपयोग करके संस्थान के बारे में गलत धारणा बनाई है।

द मूकनायक से बात करते हुए एक छात्र ने रामदास पर लगे आरोपों के बारे में बताया. उन्होंने दावा किया कि जंतर–मंतर पर एक विरोध मार्च का संचालन करने और उसे संबोधित करने के लिए वामपंथी कार्यकर्ता को निलंबित कर दिया गया है।

कांग्रेस ने उतारा युवा चेहरा हरियाणा के पूर्व सीएम के सामने, दिव्यांशु बुद्धिराजा को दिया टिकट

ikuhir ¼gfj;k.kk½A लंबी खींचतान के बाद कांग्रेस ने आखिरकार गुरुवार देर शाम को करनाल समेत आठ लोकसभा क्षेत्र के प्रत्याशी घोषित कर दिए। करनाल लोकसभा सीट पर कांग्रेस के टिकट में बड़ा बदलाव देखने को मिला। यहां पर 31 वर्ष के दिव्यांशु बुद्धिराजा को भाजपा के दिग्गज एवं दो बार मुख्यमंत्री रह चुके मनोहर लाल के सामने उतारा है।

बुद्धिराजा राज्यसभा सदस्य दीपेंद्र हुड्डा व वरिष्ठ नेता राहुल गांधी के नजदीकी बताए जा रहे हैं। कांग्रेस ने करनाल लोकसभा पर दिव्यांशी बुद्धिराजा को उम्मीदवार उतार कर पंजाबी कार्ड खेल कर भी अपनी मजबूती दिखाने की कोशिश की है।

विदित है कि लोकसभा के चुनाव 25 मई को हैं। भाजपा प्रदेश की सभी 10 सीटों पर अपने उम्मीदवार उतार चुकी है। करनाल लोकसभा से पूर्व मुख्यमंत्री मनोहर लाल को पिछले दिनों उम्मीदवार घोषित किया था। इससे पहले उनसे मुख्यमंत्री का इस्तीफा लिया था। इसके बाद हर किसी की नजर कांग्रेस के प्रत्याशी पर टिकी हुई थी।

कांग्रेस के टिकट पर कभी वीरेंद्र राठौर तो कभी पूर्व स्पीकर कुलदीप शर्मा के सुपुत्र चाणक्य पंडित का नाम प्रमुखता से रखा जा रहा था। इन सब के बीच दो दिन पहले एनसीपी के नेता वीरेंद्र मराठा का नाम भी सामने आया था। पानीपत से बड़ा पंजाबी चेहरा वरिंदर शाह का नाम भी कई बार चर्चाओं में चला। गुरुवार को कांग्रेस की सूची में सभी अटकलें और प्रयास धरे रह गए। यहां से दिव्यांशु बुद्धिराजा को उम्मीदवार घोषित किया गया है।

युवाओं की उठा चुके हैं आवाज

दिव्यांशु बुद्धिराजा युवा कांग्रेस के प्रदेश अध्यक्ष हैं। वे एनएसयूआई के नेता भी रह चुके हैं और पंजाब यूनिवर्सिटी के प्रधान रह चुके हैं। करनाल के सेक्टर 4 में रहते हैं। वह पिछले लंबे समय से युवाओं को लेकर लगातार सक्रिय थे। उन्होंने युवाओं को रोजगार उनके प्रदेश छोड़कर विदेश में जाने समेत प्रदेश में आयोजित प्रतियोगी परीक्षा को लेकर लगातार आवाज उठाई। उन्होंने पिछले दिनों इसको लेकर न्याय यात्रा भी निकाली थी। उस समय किसी को भी एहसास नहीं था कि दिव्यांशु बुद्धिराजा कांग्रेस के करनाल लोकसभा प्रत्याशी भी हो सकते हैं। युवा कांग्रेस के पूर्व प्रदेश अध्यक्ष सचिन कुंडू ने बताया कि कांग्रेस ने युवाओं पर भरोसा किया है और वह लोकसभा चुनाव में कुछ अलग कर दिखाएंगे।

यह रहेगी चुनौती

दिव्यांशु बुद्धिराजा के सामने सबसे बड़ी चुनौती भाजपा के मजबूत प्रत्याशी पूर्व मुख्यमंत्री मनोहर लाल होंगे। मनोहर लाल पानीपत समेत करनाल की सभी नौ विधानसभाओं में दो बार जनसभा कर चुके हैं। इसके अलावा पार्टी के कार्यकर्ता विधानसभा और बूथ स्तर पर लगातार जनसंपर्क कर रहे हैं। बुद्धिराजा को चुनाव प्रचार के लिए 30 दिन ही मिले हैं। उनको इन 30 दिनों में सभी 9 विधानसभाओं में पहुंचना होगा। करनाल लोकसभा से टिकट के सबसे बड़े दावेदार वीरेंद्र राठौर सबसे आगे थे, वहीं ब्राह्मणों में पूर्व स्पीकर कुलदीप शर्मा के सुपुत्र चाणक्य पंडित टिकट के मजबूत दावेदार थे। वे दोनों लोकसभा क्षेत्र में लगातार जनसंपर्क भी कर रहे थे। इनके बीच अब वीरेंद्र मराठा भी आ गए थे। वीरेंद्र मराठा ने टिकट के लिए काफी प्रयास किया। वे अब इनेलो के भी संपर्क में थे। इनेलो नेता भी उनका समर्थन देने की तैयारी में थे। करनाल से कांग्रेस ने युवा कांग्रेस के प्रदेशाध्यक्ष, एनएसयूआई के नेता और पंजाब यूनिवर्सिटी के पूर्व प्रधान दिव्यांशु बुद्धिराजा को टिकट दिया है। 31 वर्ष साल के दिव्यांशु बुद्धिराजा करनाल के रहने वाले हैं। टिकट का आधार दीपेंद्र हुड्डा, राहुल गांधी के नजदीकी होना माना जा रहा है। वह बीजेपी प्रत्याशी मनोहर लाल के खिलाफ खुलकर बोलते हैं।

चाहते हैं हमेशा स्वस्थ रहे लिवर तो आज–अभी से छोड़ दें ये गड़बड़ आदत

शरीर स्वस्थ रहे, अपशिष्ट पदार्थ ठीक तरीके से बाहर होते रहें और रक्त शुद्ध बना रहे इसके लिए जरूरी है कि आपका लिवर ठीक तरीके से काम करता रहे। लिवर सबसे महत्वपूर्ण अंगों में से एक है, पाचन को ठीक रखने से लेकर ब्लड शुगर को कंट्रोल में रखने तक के लिए लिवर का ठीक तरीके से काम करते रहना जरूरी है। हालांकि आश्चर्यजनक रूप से लिवर से संबंधित बीमारियों का खतरा काफी तेजी से बढ़ता जा रहा है।

लिवर की बीमारियों के कारण न सिर्फ पाचन स्वास्थ्य प्रभावित होता है साथ ही शरीर में और भी कई प्रकार के नकारात्मक परिवर्तन होने लग जाते हैं।

लिवर से संबंधित रोगों के बढ़ते मामलों को लेकर लोगों को जागरूक करने और इस अंग को कैसे स्वस्थ रखा जाए इस बारे में शिक्षित करने के उद्देश्य से हर साल 19 अप्रैल को विश्व लिवर दिवस मनाया जाता है।

लिवर के लिए बहुत हानिकारक है शराब

वरिष्ठ लिवर रोग विशेषज्ञ कहते हैं, लिवर की अधिकतर बीमारियों के लिए अल्कोहल के सेवन को प्रमुख कारक माना जाता है। आप जब शराब पीते हैं तो शरीर इसका ब्रेक डाउन करना शुरू कर देता है जिससे ये शरीर से बाहर निकल सके। हालांकि प्रक्रिया के दौरान ऐसे पदार्थ बनते हैं जो शराब से भी अधिक हानिकारक होते हैं। इन पदार्थों की अधिक मात्रा लिवर कोशिकाओं को नुकसान पहुंचा सकती है और गंभीर लिवर रोग का कारण बन सकती है।

लिवर की बीमारी से होने वाली 5 में से 4 मौतों का कारण शराब है। शराब के कारण होने वाले लिवर रोगों में फैटी लिवर (स्टीटोसिस) लिवर की सूजन (अल्कोहलिक हेपेटाइटिस) और सिरोसिस जैसी समस्याएं प्रमुख हैं।

शराब के कारण लिवर कोशिकाओं को क्षति

स्वास्थ्य विशेषज्ञ बताते हैं, लिवर बहुत लचीला अंग होता है और ये खुद को पुनर्जीवित करने में सक्षम होता है। हर बार जब आपका लिवर अल्कोहल को फिल्टर करता है, तो इससे लिवर की कोशिकाओं को क्षति पहुंचती है। वैसे तो लिवर नई कोशिकाओं का विकास कर लेता लेकिन अक्सर या लंबे समय तक शराब पीने से इसकी कोशिकाओं की पुनः उत्पन्न करने की क्षमता प्रभावित होने लगती है इसके परिणामस्वरूप आपके लिवर को गंभीर हो सकती है।

लिवर में फैट जमने की समस्या

अध्ययनकर्ताओं ने बताया लिवर में फैट बनने की समस्या भी कम उम्र के लोगों में देखी जा रही है। वैसे तो इसका खतरा उन लोगों में भी होता है जो शराब नहीं पीते हैं हालांकि अधिक शराब के सेवन को इसका प्रमुख कारण माना जाता है। सिरो. सिस के मामले आमतौर पर लंबे समय तक शराब अधिक सेवन से जुड़े माने जाते हैं। शोधकर्ताओं ने बताया, शराब न पाने वाले लोगों में लिवर से संबंधित बीमारियों का खतरा कम होता है।

क्या है विशेषज्ञ की सलाह?

डॉ कहते हैं, अगर आप शराब पीना बंद कर देते हैं तो लिवर से संबंधित कई प्रकार की बीमारियों से बचाव कर सकते हैं। इसके अलावा लिवर को स्वस्थ रखने के लिए आहार को ठीक रखना, हरी सब्जियों–फलों का सेवन अधिक करने को जरूरी माना जाता है। शराब से दूरी बनाकर आप शरीर के इस सबसे महत्वपूर्ण अंग की सेहत को ठीक रख सकते हैं।

कैसे जानें कहीं आपको भी तो नहीं है लिवर की बीमारी?

लिवर हमारे शरीर के सबसे महत्वपूर्ण अंगों में से एक है। रक्त को प्रोसेस करने, इसका ब्रेक डाउन और पोषक तत्वों के अवशोषण में लिवर की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। आमतौर पर माना जाता है कि लिवर का काम सिर्फ पाचन का है पर असल में इसकी और भी कई प्रकार की महत्वपूर्ण भूमिकाएं हैं। रिपोर्ट्स बताती हैं कि समय के साथ लिवर से संबंधित कई प्रकार की बीमारियों के मामले काफी तेजी से बढ़ते जा रहे हैं। इतना ही नहीं कम उम्र के लोग भी इसके शिकार हो रहे हैं।

आंकड़ों पर नजर डालें तो पता चलता है कि लिवर रोगों के कारण सालाना दो मिलियन (20 लाख) से अधिक लोगों की मौत हो जाती है। दुनियाभर में होने वाली प्रत्येक 25 में से एक मौत के लिए लिवर की समस्या को कारण माना जाता है। लिवर की बढ़ती बीमारियों के बारे में लोगों को जागरूक करने और लिवर रोगों से बचाव को लेकर शिक्षित करने के उद्देश्य से हर साल 19 अप्रैल को विश्व लिवर दिवस मनाया जाता है।

क्या आपका लिवर स्वस्थ है, कहीं इसमें कोई दिक्कत तो नहीं? आइए जानते हैं कि इसकी किस प्रकार से पहचान की जा सकती है?

कैसे जानें कि स्वस्थ है आपका लिवर?

सामान्य तौर पर यदि आपके मूत्र का रंग हल्का है और मल त्याग भी नियमित है, तो यह संकेत माना जाता है कि आपका लिवर सही ढंग से काम कर रहा है। स्वस्थ लीवर ग्लाइकोजन का उत्पादन करता है, जो शरीर को ऊर्जा प्रदान करता है। ऐसे में जब लिवर स्वस्थ रहता है तो आप ऊर्जावान महसूस करते हैं।

डॉक्टर कहते हैं, यह सुनिश्चित करना कि आपका लिवर स्वस्थ रहे, सभी लोगों की सर्वोच्च प्राथमिकता होनी चाहिए। लिवर कितना ठीक है इसको निश्चित रूप से जानने का एकमात्र तरीका रक्त परीक्षण कराना है। हालांकि कुछ संकेत बताते हैं कि लिवर स्वस्थ नहीं है, ऐसे लक्षणों पर निरंतर ध्यान देते रहना चाहिए।

लिवर में होने वाली समस्याओं के लक्षण

स्वास्थ्य विशेषज्ञ कहते हैं, लिवर की बीमारियों में हमेशा लक्षण नजर आना जरूरी नहीं है। हालांकि जैसे–जैसे समस्या बढ़ती जाती है आपको कई प्रकार की स्वास्थ्य समस्याओं का अनुभव हो सकता है। लिवर की बीमारी वाले लोगों को अक्सर पेट में दर्द और सूजन महसूस होते रह सकता है। इसके अलावा चूंकि लिवर रक्त का साफ करता है, लिवर में दिक्कत होने के कारण खून में अशुद्धि बढ़ने लगती है जिससे पैरों और टखनों में सूजन, त्वचा में खुजली हो सकती है। कुछ लोगों को गहरे रंग का पेशाब होने, लगातार थकान रहने की भी समस्या हो सकती है।

बार–बार पीलिया होना एक संकेत

जिन लोगों को लिवर की बीमारी होती है उन्हें अक्सर पीलिया की समस्या होती रहती है। लिवर के ठीक तरीके से काम न करने की स्थिति में रक्त में बिलीरुबिन की मात्रा बढ़ने लगती है। इसकी अधिकता आंखों और त्वचा में पीलापन पैदा करता है जिससे आपक. ो पीलिया के लक्षण होने लगते हैं। पीलिया आमतौर पर लिवर की बीमारी का एक लक्षण माना जाता है। ऐसा इसलिए होता है क्योंकि आपकी क्षतिग्रस्त लिवर कोशिकाएं बिलीरुबिन को संसाधित नहीं कर पाती हैं। बिलीरुबिन आपके रक्त में चला जाता है।

नींद की समस्या होना

नींद की दिक्कतों के बढ़ने को क्रोनिक लिवर डिजीज (सीएलडी) का एक सामान्य संकेत माना जाता है। सीएलडी वाले 60–80 प्रतिशत मरीज नींद की समस्या रिपोर्ट करते हैं। नींद में खलल, अनिद्रा, अक्सर रात में नींद टूट जाने की समस्या को लिवर रोग का संकेत माना जाता है। नींद की समस्याओं के कई और भी कारण हो सकते हैं, हालांकि अगर आपको पाचन में दिक्कतों के साथ, पीलिया की भी समस्या रहती है तो इसे लिवर की बीमारियों का संकेतक माना जा सकता है।

आंखों की नमी बनाए रखने-रोशनी बढ़ाने के लिए वैज्ञानिकों ने बताए उपाय, सभी उम्र वालों के लिए जरूरी

वैश्विक स्तर पर आंखों से संबंधित कई प्रकार की बीमारियों को समय के साथ बढ़ता हुआ देखा जा रहा है। कुछ दशकों पहले तक आंखों की समस्याओं को उम्र बढ़ने के साथ होने वाले विकारों के रूप में जाना जाता था, हालांकि अब कम उम्र के लोग भी इसके शिकार पाए जा रहे हैं। डॉक्टर्स बताते हैं, लाइफस्टाइल और आहार में गड़बड़ी के अलावा बढ़ा हुआ स्क्रीनटाइम भी आंखों के लिए नुकसानदायक है। इसके कारण कम दिखाई देने से लेकर, ड्राई आइज, आंखों में दर्द, ग्लूकोमा और कुछ स्थितियों में रोशनी तक चले जाने की समस्या भी देखी जा रही है।

स्वास्थ्य विशेषज्ञ कहते हैं, आंखों को स्वस्थ रखने के लिए पौष्टिक आहार के सेवन के साथ नियमित रूप से कुछ अभ्यास करना लाभकारी हो सकता है। पलकों को झपकाने की आदत इसमें सबसे फायदेमंद मानी जाती रही है। माना जाता है कि पलकों को झपकाने से आंखों की नमी बनी रहती है और ड्राई आइज की समस्या का जोखिम कम होता है।

हालिया अध्ययन में शोधकर्ताओं ने इस आदत को आंखों की रोशनी बढ़ाने वाला भी पाया है। क्या आप समय–समय पर पलकों को झपकाते हैं?

पलकें झपकाने से आंखों को मिलता है आराम

अमेरिका की रोचेस्टर यूनिवर्सिटी में हुए अध्ययन के मुताबिक, बार–बार पलक झपकने से न सिर्फ आंखों की नमी को बनाए रखने में मदद मिलती है साथ ही इससे आंखों की रोशनी भी बढ़ती है। शोधकर्ताओं ने बताया कि जब आप पलक झपकाते है तो इससे रेटिना उत्तेजित होती है जिससे छवि साफ दिखने में मदद मिलती है। इतना ही नहीं पलकें झपकने से हमारा दिमाग भी सक्रिय मोड में रहता है। हम जितने देर जागते हैं, उतनी देर में पलकें झपकने से हमारी आंखें करीब 10त्न समय बंद रहती है, इससे दिमाग को आराम मिलता है।

अध्ययन में क्या पता चला?

विश्वविद्यालय में न्यूरोसाइंटिस्ट बिन यांग ने अपने प्रकाशित पेपर में लिखा है, हमने पाया है कि पलक झपकने से रेटिना की उत्तेजना की शक्ति बढ़ जाती है। आंखों की मांसपेशियों के लिए ये सरल व्यायाम भी है। मांसपे. शियां जितनी सक्रिय रहेंगी, रक्त का संचार भी उतना ही ठीक रहता है जिससे आप न सिर्फ आंखों को स्वस्थ रख सकते हैं साथ ही इससे संबंधित कई प्रकार के विकारों को भी कम किया जा सकता है।

पिछले शोधों से पता चलता है कि पलकें झपकाने से हमारी ध्यान क्षमता भी एक्टिव होती है, वस्तुओं को पहच. ानने में मदद मिलती है। इसके अलावा इससे आंखों को सूखने से बचाने में मदद मिलती है जो कई प्रकार की बीमारियों का प्रमुख कारण रहा है।

ड्राई आइज की समस्या का कम होता है जोखिम

अध्ययनकर्ताओं ने पाया कि पलकों को झपकने से आंखें, मस्तिष्क से मिल रही दृश्य संबंधी जानकारी को पुनः स्वरूपित कर पाती हैं। जिन लोगों में कुछ कारणों से पलकों के न झपकने की समस्या होती है उनमें ड्राई आइज जैसे विकारों का खतरा भी अधिक हो सकता है। ड्राई आइज को अंधेपन का एक प्रमुख जोखिम कारक माना जाता रहा है।

स्वास्थ्य विशेषज्ञ कहते हैं, पलकें झपकाने के कई लाभ हैं पर अनावश्यक रूप से पलकों को झपकाने से नुकसान भी हो सकता है। ज्यादा पलकें झपकाने के भी नुकसान शोधकर्ताओं ने कहा, आंखों की नमी बरकरार रहे, रोशनी बेहतर बनी रहे इसके लिए समय–समय पर पलकों को झपकाते रहना जरूरी है, पर ज्यादा लाभ के चक्कर में अनावश्यक रूप से ये काम नहीं किया जाना चाहिए। ऐसा करने से आप आंखों की रोशनी जल्दी खो सकते हैं।

आंखों को स्वस्थ रखने और अंधेपन जैसी समस्याओं से बचाव के लिए आहार में रंग–बिरंगी सब्जियों को शामिल करें साथ ही स्क्रीनटाइम को कम करना भी जरूरी है।

हेपेटाइटिस बी–सी से रोजाना 3500 लोगों की मौत

विश्व हेपेटाइटिस शिखर सम्मेलन में जारी रिपोर्ट में कहा गया है, हर दिन हेपेटाइटिस बी और सी संक्रमण के कारण वैश्विक स्तर पर 3,500 लोग मर रहे हैं। पांच प्रकार के वायरस, वायरल हेपेटाइटिस के विभिन्न रूपों का कारण बनते हैं जिनमें हेपेटाइटिस ए, बी, सी, डी और ई प्रमुख हैं।

हेपेटाइटिस बी और सी संक्रमण मुख्यरूप से लिवर को प्रभावित करते हैं, इससे न सिर्फ लिवर में सूजन हो सकती है साथ ही गंभीर स्थितियों में लिवर डैमेज होने का भी जोखिम रहता है।

कैसे फैलता है हेपेटाइटिस बी और सी का संक्रमण?

हेपेटाइटिस–बी लिवर का संक्रमण है जो हेपेटाइटिस–बी नामक वायरस के कारण होता है। अधिकांश लोगों में ये संक्रमण कुछ समय में ठीक हो जाता है हालांकि कुछ स्थितियों में ये छह महीनेतक भी रह सकता है। वहीं हेपेटाइटिस–सी वायरस के कारण होने वाले लिवर की सूजन के कारण गंभीर रोग के मामले लिवर सिरोसिस और कैंसर तक का जोखिम हो सकता है। हेपेटाइटिस–बी का संक्रमण संक्रमित व्यक्ति के रक्त, वीर्य या शरीर का अन्य तरल पदार्थ के स्वस्थ व्यक्ति के शरीर में प्रवेश से फैलता है। वहीं हेपेटाइटिस सी, संक्रमित व्यक्ति के रक्त के संपर्क में आने से होता है। अधिकांश लोग इंजेक्शन सुइयों को साझा करने से संक्रमित हो जाते हैं।

नोट- आप का सामना की हेल्थ,युवा, शिक्षा सामना कैटेगरी में प्रकाशित सभी लेख डॉक्टर, विशेषज्ञों व अकादमिक संस्थानों से पेशेवर पत्रकारों द्वारा बातचीत के आधार पर पाठक की जानकारी व जागरूकता बढ़ाने के लिए तैयार किये जाते है। आप का सामना लेख में प्रदत्त जानकारी व सूचना को लेकर किसी तरह का दावा नहीं करता है और न ही जिम्मेदारी लेता है। उपरोक्त लेख में उल्लेखित संबंधित बीमारी,शिक्षा,जॉब के बारे में अधिक जानकारी के लिए अपने डॉक्टर,शिक्षक से परामर्श लें।

चीन के बाद भारत में रिपोर्ट किए गए हेपेटाइटिस बी–सी के सबसे ज्यादा मामले

विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) ने अपनी हालिया रिपोर्ट में भारत में बढ़ते संक्रामक रोगों को लेकर चेतावनी जारी की है।

रिपोर्ट के अनुसार साल 2022 में भारत में हेपेटाइटिस बी और सी के मामलों में काफी तेजी से वृद्धि दर्ज की गई है, इस साल 3.5 करोड़ से अधिक संक्रमण के मामले दर्ज किए गए हैं। चीन के बाद भारत हेपेटाइटिस बी और सी संक्रमण के सबसे अधिक मामले वाला दूसरा देश बन गया है। ये स्वास्थ्य के लिए गंभीर सूचक है। डब्ल्यूएचओ की 2024 ग्लोबल हेपेटाइटिस रिपोर्ट के अनुसार, साल 2022 में वैश्विक स्तर पर 254 मिलियन (25.4 करोड़) लोग हेपेटाइटिस बी और 50 मिलियन (पांच करोड़) लोग हेपेटाइटिस–सी से पीड़ित थे।

इतना ही नहीं वायरल हेपेटाइटिस के कारण मरने वालों की संख्या बढ़ रही है। सभी लोगों को सुरक्षात्मक उपाय करते रहना चाहिए।

> हमारे देश के संविधान में मतदान का अधिकार एक ऐसी ताकत है, जो किसी ब्रह्मास्त्र से कहीं अधिक ताकत रखता है।
>
> -डॉ० भीमराव अंबेडकर

संपादकीय

हर संपत्ति का ब्योरा जरूरी नहीं

सुप्रीम कोर्ट ने अपने आदेश में कहा कि उम्मीदवारों को अपनी हर चल संपत्ति का खुलासा करने की जरूरत नहीं है। केवल उन संपत्तियों का खुलासा करना होगा जो उनकी सार्वजनिक छवि या जीवनशैली को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करती हैं और मतदाता की पसंद पर असर डालती हैं। सुप्रीम कोर्ट ने एक अहम फैसले में असम, नगालैंड, मिजोरम और अरुणाचल प्रदेश हाईकोर्ट के आदेश को पलटते हुए व्यवस्था दी कि चुनाव में किसी प्रत्याशी के लिए अपनी हरेक चल संपत्ति का ब्योरा देना जरूरी नहीं है। फैसला इस लिहाज से खास है कि इसमें मतदाताओं के साथ–साथ प्रत्याशी के अधिकार का भी ध्यान रखने की जरूरत पर जोर दिया गया है। इसके अलावा यह इस बात की ओर भी ध्यान खींचता है कि शब्दों पर जरूरत से ज्यादा बल देना कभी–कभी अनजाने ही कानून को निरर्थकता की ओर ले जाने लगता है।

चुनाव सुधारों की बात करते हुए अमूमन मतदाताओं के जानने के अधिकार पर ज्यादा जोर रहता है। इस फैसले ने ध्यान दिलाया है कि प्रत्याशी भी इस देश के नागरिक हैं। ऐसे में मतदाताओं के सूचित होने के अधिकार को समुचित महत्व देते हुए भी प्रत्याशियों के निजता के अधिकार की ओर से पूरी तरह आंखें मूंद लेना ठीक नहीं होगा।

ध्यान रहे, जिस मामले में सुप्रीम कोर्ट ने यह फैसला दिया है उसमें प्रत्याशी पर तीन वाहनों की जानकारी न देने और सरकारी आवास से जुड़े नो ड्यूज सर्टिफिकेट जमा न करने का आरोप था। शीर्ष अदालत ने इस तथ्य की ओर ध्यान दिया कि तीनों वाहन भले ही कागज पर प्रत्याशी के परिजनों के नाम पर हों, लेकिन वे पहले ही बेचे या गिट किए जा चुके थे। ऐसे ही इस तथ्य को लेकर कोई विवाद नहीं था कि प्रत्याशी पर किसी तरह का बकाया नहीं था, बस नो ड्यूज सर्टिफिकेट जमा न करने की बात थी। सुप्रीम कोर्ट ने साफ किया कि इसे प्रत्याशी का निर्वाचन रद्द करने का आधार नहीं माना जा सकता।

फैसले में कोर्ट ने यह भी कहा कि ऐसे मामलों में कोई एक लकीर नहीं खींची जा सकती कि कौन सी चल संपत्ति ब्योरा देने लायक है और कौन सी नहीं। हर केस के हिसाब से गौर किया जाना चाहिए। किसी प्रत्याशी के परिजना. की सामान्य घड़ी का ब्योरा देना अनावश्यक हो सकता है, लेकिन अगर किसी के परिवार में बेहद महंगी कई सारी घडियां हों तो उसका ब्योरा छिपाया जाना अपराध हो सकता है।

यहां इस सवाल से नहीं बचा जा सकता कि क्या इस फैसले से आगे ऐसे मामलों में अलग–अलग व्याख्याओं की गुंजाइश बन गई है, जिसका दुरुपयोग हो सकता है। क्या इसका फायदा उठाते हुए आगे चलकर कुछ प्रत्याशी ऐसी भी सूचनाएं छुपा सकते हैं, जो चुनाव और वोटर के लिहाज से अहम हों?

सतर्कता की जरूरत

जाहिर है इस संभावना को लेकर ज्यादा सतर्कता बरतने की जरूरत होगी। लेकिन इसमें संदेह नहीं कि सुप्रीम कोर्ट के इस फैसले ने इस अहम कानून की सार्थकता बढ़ाने और इसे प्रासंगिक बनाए रखने का काम किया है।

चीन का अड़ियल रवैया

चीन गाहे–बगाहे भारत की भूमि पर अपना अधिकार जमाने की बात करता ही है। हाल ही में उसने अरुणाचल प्रदेश को लेकर अपना अड़ियल स्टैंड दिखाया था। वहीं भारत ने परिपक्वता दिखाते हुए सीमा विवाद सुलझाने की पहल की है।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने चीन के साथ सीमा विवाद को हल करने की जरूरत बताई है, जो कि बिल्कुल सही रुख है। दोनों देश पड़ोसी होने के साथ ही दुनिया की दो बड़ी अर्थव्यवस्थाएं और ग्रोथ इंजन हैं। इसलिए किसी भी तरह के टकराव से दोनों का ही नुकसान है। ऐसे में पीएम मोदी का यह कहना सही है कि पूरे क्षेत्र और दुनिया के लिए भारत–चीन के बीच स्थिर और शांतिपूर्ण संबंध अहम हैं।

भारत का यह स्टैंड ऐसे समय सामने आया है, जब चीन ने अरुणाचल प्रदेश को लेकर एक बार फिर से अड़ियल रवैया अपनाया है। वह पहले भी अरुणाचल प्रदेश में भारतीय सीमा में कई जगहों के नाम बदल चुका है। चीन इस इलाके पर अपना दावा ठोकता रहा है और इस राज्य को जंगनान बुलाता है।भारत में इस समय लोकसभा चुनाव के लिए प्रचार चल रहा है। ऐसे में विपक्ष भी चीन के साथ विवाद का मुद्दा उठा रहा है। विपक्ष का आरोप है कि चीन ने 2020 में हमारे हिस्से की जमीन पर कब्जा कर लिया, जबकि सरकार इसे बेबुनियाद आरोप बताती रही है।

भारत की पहल के बाद अब गेंद चीन के पाले में है। उसकी तरफ से कोई सकारात्मक कदम उठता दिखना चाहिए। हालांकि पिछले कुछ वर्षों में चीन का रुख ऐसा नहीं रहा है, जिससे कोई आस बंधे। दोनों मुल्कों के मौजूदा संबंधों की बात करें, तो 2017 में डोकलाम विवाद के बाद से सीमा पर माहौल कभी सामान्य नहीं हो पाया। बल्कि, 2020 में गलवान में हुई झड़प ने स्थिति और बिगाड़ी ही है। भारत का स्पष्ट कहना है कि चीन पहले अपनी सेनाओं को पीछे करे, उसके बाद ही रिश्ते आगे बढ़ेंगे।

अब सवाल है कि भारत को लेकर चीन इतना आक्रामक क्यों है? बाकी पड़ोसियों के साथ तो उसने सीमा विवाद सुलझा लिया या फिर सुलझाने के करीब है, लेकिन भारत के साथ वह इस विवाद को हल के वर्षों में और हवा दे रहा है। दरअसल, इसे चीन की विदेश नीति का हिस्सा कह सकते हैं। चीन के बाकी पड़ोसी उसके मुकाबले दुनिया में खड़े होने की हैसियत फिलहाल नहीं रखते, जबकि भारत तेजी से तरक्की कर रहा है। दुनिया भी मान रही है कि चीन का अगर कोई विकल्प हो सकता है, तो भारत ही। ऐसे में चीन सीमा विवाद को जिंदा रखकर हिंदुस्तान पर दबाव बनाए रखना चाहता है।

अब और बदला नहीं

ईरान ने ईजरायल पर अटैक कर अपना बदला लिया और जवाब में इजरायल ने भी। अब दुनिया का हर व्यक्ति यही दुआ कर रहा होगा कि इस जंग को और न तूल दिया जाए। अब और बदले की भावना से अटैक न हों।

ईरानी मिसाइल और ड्रोन हमलों के छह दिन बाद शुक्रवार सुबह इजरायल की ओर से ईरान पर जवाबी हमले की खबरों ने पूरी दुनिया को एकबारगी सकते में डाल दिया। लगा कि इस पूरे क्षेत्र में युद्ध फैलने की जो आशंका पिछले कुछ दिनों से बनी हुई थी, वह सच हो रही है। लेकिन हमले को लेकर इजरायल और ईरान के शुरुआती रुख पर गौर करें तो पिछले दिनों चले अंतरराष्ट्रीय कूटनीतिक प्रयासों के पॉजिटिव असर भी दिख रहे हैं।

पिछले 13 अप्रैल को ईरान की ओर से इजरायल पर हुए हमले के बाद जहां इजरायल जवाबी कार्रवाई पर अड़ा हुआ था, वहीं ईरान बार–बार दो. हरा रहा था कि अगर इजरायल ने आगे कुछ भी किया तो उसका जवाब पहले से ज्यादा तगड़ा होगा। ऐसे में सभी प्रमुख देशों की कोशिश मामले को ठंडा करने की थी। लेकिन शुक्रवार सुबह आई ताजा इजरायली हमले की खबरों से एकबारगी हालात बेकाबू होते से लगे।

परमाणु केंद्र थे निशाने पर

मामला ज्यादा गंभीर इसलिए भी था कि इजरायली ड्रोन और मिसाइल हमलों का मुख्य निशाना ईरान का इस्फहान शहर बताया गया, जो न केवल मिसाइल उत्पादन का एक बड़ा केंद्र है बल्कि कई परमाणु केंद्रों का भी ठिकाना है। अच्छी बात यह रही कि इस हमले से जान–माल की क्षति की कोई खबर नहीं है। अंतरराष्ट्रीय परमाणु ऊर्जा एजेंसी (द्व्रश्र) ने इस बात की पुष्टि की है कि हमले में किसी परमाणु केंद्र को नुकसान नहीं हुआ है।

खास बात यह कि इजरायल और ईरान दोनों ही इस हमले को तूल देने के मूड में नहीं दिखते। इजरायल की ओर से अमेरिकी अधिकारियों को कार्रवाई की पूर्व सूचना दे दी गई थी, लेकिन आधिकारिक तौर पर ईरान ने इसकी घोषणा भी नहीं की। अमेरिकी अधिकारियों ने ही मीडिया को इस बारे में बताया। दूसरी ओर ईरान ने कुछ ड्रोन को मार गिराने की बात जरूर कही, लेकिन इसके लिए इजरायल या किसी अन्य देश को जिम्मेदार नहीं ठहराया।

इसे घुसपैठ की कोशिश कहा गया। स्वाभाविक ही ईरान की ओर से बदले की कार्रवाई का भी कोई संकेत नहीं है।

क्रू मेंबर्स पर प्रगति

इस बीच भारत के लिए अतिरिक्त राहत की एक खबर यह है कि ईरान द्वारा जब्त मालवाहक जहाज रूस्ष्ट ह्यद्बह्यह्य पर फंसे 17 भारतीय क्रू मेंबर्स में शामिल एकमात्र महिला सदस्य ऐन टेस्सा जोसफ स्वदेश लौट आई हैं।

अन्य सदस्यों की रिहाई पर भी ईरानी अधिकारियों से पॉजिटिव बातचीत चल रही है।

अगर शुरुआती संकेत सही साबित होते हैं और यह प्रकरण शांति से निपट जाता है तो यह हाल के दिनों में अंतरराष्ट्रीय कूटनीति की एक ऐसी जीत होगी, जो युद्ध के बजाय बात. चीत से मसले हल करने की प्रेरणा को मजबूती देगी।

सुरक्षा बलों को कामयाबी

छत्तीसगढ़ के कांकेर जिले में मंगलवार को माओवादियों से हुई मुठभेड़ में सुरक्षा बलों को मिली कामयाबी सामान्य नहीं है। मारे जाने वाले माओवादियों की बड़ी संख्या इसका सिर्फ एक पहलू है। जिस तरह से सुरक्षा बलों ने माओवादियों की मौजूदगी की सूचना हासिल की, अलग–अलग सूत्रों से उसकी पुष्टि कराई, जिस तरह से ऑपरेशन की योजना तैयार की, जिस कुशलता से उसे अंजाम दिया और इस दौरान केंद्र से लेकर राज्य और जिला स्तर तक जिस तालमेल के साथ उस टीम को सभी जरूरी सुविधाएं मुहैया कराई गईं– वह सब गौर करने लायक है।

सबसे बड़ा अभियान

स्थानीय प्रशासन ने इस बात की पुष्टि की है कि बस्तर संभाग में यह माओ. वादियों के खिलाफ अब तक का सबसे बड़ा अभियान है। इस पूरे क्षेत्र के नजरिए से देखा जाए तो भी यह हाल के वर्षों के बड़े अभियानों में आता है। लेकिन इसकी अहमियत इस मामले में भी है कि कई ऐसे नाम एक साथ पुलिस कार्रवाई की जद में आ गए जो इस क्षेत्र में माओवादी अभियानों की अगुआई करने के लिए जाने जाते रहे थे। इस लिहाज से यह सुरक्षा बलों की ओर से इस क्षेत्र में वामपंथी अतिवाद को दिया गया एक जोरदार झटका है।

बरसों की तैयारी

फिर भी इस उपलब्धि को प्रशासन की तात्कालिक तैयारियों का ही नतीजा नहीं माना जा सकता। इसके पीछे कई वर्षों से किए जा रहे प्रयासों की भी भूमिका है। इस बीच न केवल माओवाद प्रभावित कई दुर्गम इलाकों को सड़कों से जोड़ने का काम किया गया है बल्कि खास तौर पर पिछले पांच–सात वर्षों में सुदूर इलाकों में पुलिस कैंप लगाए गए हैं। यह अहम साबित हुआ है। इससे सुरक्षा बलों की टुकड़ियों को मौके पर पहुंचने के लिए ज्यादा दूरी नहीं तय करनी पड़ती। लिहाजा वे जल्दी पहुंच जाती हैं और माओवादियों को तैयारी करने का ज्यादा वक्त नहीं मिलता।

बढ़ी हुई आक्रामकता

इस संदर्भ में ध्यान देने लायक बात यह भी है कि पिछले कुछ समय से सुरक्षा बलों का रुख पहले के मुकाबले ज्यादा आक्रामक हुआ है। यह सुरक्षा बलों से मुठभेड़ में मारे जाने वाले माओवादियों की संख्या से भी स्पष्ट होता है। साल 2024 के इन साढ़े तीन महीनों में ही छत्तीसगढ़ में सुरक्षा बलों के हाथों 79 माओवादी मारे जा चुके हैं जबकि 2023 में पूरे साल के दौरान यह संख्या महज 22 थी।

कमर टूटी

पहले भी माओवादियों के खिलाफ बड़े अभियान हुए हैं। लेकिन एक बड़ा फर्क यह दिखता है कि माओवादियों की तरफ से वैसी जवाबी कार्रवाई नहीं हो रही जैसी पहले हुआ करती थी। इसे इस बात का संकेत माना जा रहा है कि माओवादियों की कमर टूट चुकी है।

अगर यह सच है तो भी यह सुनिश्चित करना होगा कि यह दोबारा मजबूती न हासिल कर ले। और, इसके लिए सुरक्षा बलों की कार्रवाई काफी नहीं है।

इसके साथ–साथ सरकार की कल्याणकारी योजनाओं की पहुंच भी बढ़ानी होगी।

मौसम की खुशखबरी

अच्छी बारिश से ग्रामीण सेक्टर में रोजगार के मोर्चे पर भी राहत मिल सकती है, जो खुदरा महंगाई दर और रिजर्व बैंक के अंदर है। बारिश से फसलों में उत्पादन की उम्मीद है।

यह खबर वाकई राहत देने वाली है कि इस साल मॉनसून के दौरान देश में सामान्य से अधिक बारिश होने के आसार हैं। लगातार चार साल तक सामान्य और सामान्य से ज्यादा बारिश के बाद पिछले साल यानी 2023 में मॉनसून औसत से कम बारिश लेकर आया था। ऐसे में इस साल की भविष्यवाणी ज्यादा अहम हो जाती है।

मौसम विभाग का यह पूर्वानुमान इस मायने में भी ध्यान खींचता है कि पिछले दस वर्षों में यह पहला मौका है, जब उसने पहले ही चरण में सामान्य से ज्यादा बारिश की बात कह दी। आम तौर पर पहले चरण की भविष्यवाणी में ज्यादा सतर्कता बरतने का चलन है। इसकी वजह शायद यह है कि पिछले साल के अल नीनो इफेक्ट के बाद इस साल अच्छी बारिश की ठोस संभावना बना रही है।

मौसम के बदलते मिजाज के चलते आजकल सामान्य या अच्छी बारिश की भविष्यवाणी भी आशंकाओं को पूरी तरह समाप्त नहीं करती क्योंकि यह पता नहीं होता कि पूरे देश में बारिश का अच्छा औसत आखिरकार एक इलाके में सूखे और दूसरे में अतिवृष्टि के हालात तो नहीं पैदा करेगा। गनीमत है कि इस बार पूर्वोत्तर के कुछ राज्यों को छोड़ दिया जाए तो बाकी पूरे देश में अच्छी बारिश के आसार बताए जा रहे हैं।

ध्यान रहे, देश में 70 फीसदी बारिश मॉनसून के दौरान ही होती है। आज भी देश की कुल खेती का 51 फीसदी हिस्सा मॉनसून पर ही निर्भर है। उपज के लिहाज से यह करीब 40 फीसदी बैठता है। जाहिर है, अच्छा मॉनसून अपने देश में आज भी अच्छी फसल का दूसरा नाम हो जाता है। इसकी वजह से न केवल धान, मक्का, गन्ना, कपास और जूट जैसी खरीफ की फसलों में अच्छे उत्पादन की उम्मीद बनी है बल्कि जमीन में नमी और आसपास पानी की उपलब्धता की बदौलत रबी की गेहूं, चना, सरसों जैसी फसलों को भी मदद मिल सकती है।

यह स्थिति आगामी महीनों में महंगाई के मोर्चे पर हालात को काबू में रख सकती है। आंकड़ों के मुताबिक खुदरा महंगाई दर मार्च महीने में 4.85 फीसदी रही।

यह रिजर्व बैंक द्वारा तय 2–6 फीसदी की सीमा के अंदर जरूर है लेकिन इसे 4 फीसदी तक लाने के उसके घोषित लक्ष्य से अभी भी दूर है। इकॉनमी कुल मिलाकर भले अपनी रतार बनाए हुए हो, लेकिन ग्रामीण सेक्टर में कमजोर खपत नीति निर्माताओं की चिंता का कारण है। सामान्य से अधिक बारिश की बदौलत अच्छी फसल ग्रामीण क्षेत्रों में मांग को मजबूती दे सकती है, जिससे न केवल फैक्ट्रियों के कामकाज में तेजी आएगी बल्कि रोजगार के मोर्चे पर भी राहत मिल सकती है।

मध्य प्रदेश एससी आयोग ने लिया संज्ञान कहा–महिला–दलित पत्रकारों को दो प्रतिनिधित्व

HkkikyA महिला पत्रकारों सहित एससी/एसटी और ओबीसी वर्ग के पत्रकारों को जनसंपर्क की समितियों में आरक्षण देकर शामिल करने की मांग पर राज्य अनुसूचित जाति आयोग ने स्वतः संज्ञान लिया है। आयोग ने जनसंपर्क विभाग के प्रमुख सचिव को पत्र लिख कर कहा है कि वंचित वर्ग को पत्रकारिता के क्षेत्र में प्रतिनिधित्व दिए जाने के लिए समु. चत कार्यवाही कर आयोग को अवगत कराएं। बता दें कि अजाक्स की मांग को द मूकनायक ने प्रमुखता से प्रका. शित किया था, जिसके बाद एससी आयोग ने इस मामले में संज्ञान लिया है।

बीते माह अजाक्स ने मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव को पत्र लिख कर पत्रकार समितियों में वंचित वर्ग के पत्रकारों को शामिल करने की मांग की थी। अजाक्स ने मुख्यमंत्री को पत्र लिख कर कहा था कि पिछले कई वर्षों से पत्रकार कल्याण के लिए मध्यप्रदेश शासन, जनसंपर्क विभाग द्वारा प्रदेश एवं संभाग स्तरीय समितियों का गठन किया जाता रहा है, लेकिन इन समितियों में अनुसूचित जाति (एससी), अनुसूचित जनजाति (एसटी) के पत्रकारों की मौजूदगी शून्य रही है।

इसी प्रकार अन्य पिछड़ा वर्ग (ओबीसी) और महिला पत्रकारों की संख्या भी कम रही है, जिसके परिणामस्वरूप पत्रकारिता के क्षेत्र में वंचित वर्गों का प्रतिनिधित्व नगण्य है। वर्तमान में राज्य एवं संभाग स्तरीय अधिमान्य पत्रकार समिति एवं राज्य पत्रकार कल्याण संचार समिति का गठन नहीं हुआ है।

अजाक्स ने मुख्यमंत्री से मांग की थी कि पत्रकार समितियों में एससी/एसटी, ओबीसी एवं महिला पत्रकारों को शामिल कर शीघ्र समिति गठन हो। जिससे पत्रकारिता के क्षेत्र में वंचित एवं महिला वर्ग को संविधान एवं शासन की मंशानुरूप समुचित प्रतिनिधित्व मिल सके।

द मूकनायक से बातचीत करते हुए अजाक्स के प्रांतीय महासचिव एसएल सूर्यवंशी ने बताया कि वह पिछले सालों में पत्रकारों की कई समितियों को देखते चले आए हैं, लेकिन इन समितियों आदिवासी, दलित वर्ग के पत्रकार नहीं होते जिसके कारण वंचित वर्ग के लोग पत्रकारिता में नहीं आ रहे।

सूर्यवंशी ने कहा– संघ ने मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के साथ प्रमुख सचिव, जनसंपर्क को पत्र लिख कर महिलाओं के साथ एसटी/एससी और ओबीसी वर्ग के पत्रकारों को समिति में स्थाई आरक्षण देते हुए शामिल करने की मांग की थी। अब इस मांग पर अनुसूचित जाति आयोग ने संज्ञान लिया है। हम आयोग का आभार मानते है की वह वंचित वर्ग के अधिक. ारों की रक्षा के लिए सजग है।

जानिए आयोग के पत्र में क्या?

मध्य प्रदेश राज्य अनुसूचित जाति आयोग के सचिव के हस्ताक्षर से 2 मार्च को प्रमुख सचिव जनसम्पर्क विभाग को भेजे गए पत्र में आयोग ने लिखा– आयोग को एस.एल. सूर्यवंशी, प्रांतीय महासचिव अनुसूचित जाति/जनजाति अधिकारी एवं कर्मचारी संघ भोपाल म.प्र. से प्राप्त संदर्भित पत्र का अवलोकन करने का कष्ट करें। जिसमें उल्लेख अनुसार वंचित एवं महिला वर्ग को संविधान एवं शासन की मंशा अनुरूप पत्रकारिता के क्षेत्र में समुचित प्रतिनिधित्व दिये जाने हेतु राज्य एवं संभाग स्तरीय अधिमान्य पत्रकार समिति एवं राज्य पत्रकार कल्याण संचार समिति के गठन का अनुरोध किया है। अतः इस वर्ग को पत्रकारिता के क्षेत्र में प्रतिनिधित्व दिये जाने हेतु .पया उपरोक्तानुसार समुचित कार्यवाही कर आयोग को भी अवगत कराने का कष्ट करें।

पांच साल से गठित नहीं हुई समिति जनसंपर्क विभाग द्वारा पत्रकारो को शासन की योजनाओं से जोडने के लिए समितियों का गठन किया जाता है। वर्ष 2019 में पत्रकार संचार कल्याण समिति और अधिमान्यता समिति का गठन किया गया था। इन समितियों का कार्यकाल दो वर्ष के लिए होता है। फिलहाल अभी तक दोनों ही समिति का गठन सरकार नहीं कर पाई है। वहीं पत्रकारों को अधिमान्य करने के लिए भी जनसंपर्क विभाग ने संभाग और राज्य स्तरीय समितियों का गठन भी नहीं हो पाया है।

पत्रकार अधिमान्यता और कल्याण समितियों में सवर्णों का कब्जा रहा है। इसका कारण यह भी है कि अनुसू. चत जाति/जनजाति वर्ग के पत्रकार प्रदेश में 1 प्रतिशत भी नहीं है। पिछले समय में जनसंपर्क विभाग ने जितनी भी समितियां गठित की उनमें सवर्ण वर्ग के पत्रकारों को ही शामिल किया गया, यहां तक की महिला और ओबीसी की पत्रकारों की संख्या एक या दो सदस्यों तक ही सीमित रही।

द मूकनायक प्रतिनिधि से बातचीत में भोपाल के पत्रकार प्रदीप नागर ने कहा– मध्य प्रदेश में पत्रकारिता के क्षेत्र में अनुसूचित जाति, जनजाति, महिला पत्रकारों की कमी है। निश्चित रूप से सभी वर्गों को मौका मिलना चाहिए। सभी वर्गों के पत्रकारों को जनसंपर्क की समिति में शामिल किया जाना ही चाहिए।

सामाजिक न्याय और वंचित वर्ग के प्रतिनिधित्व के लिए यह जरूरी है। अजाक्स की मांग का हम पूर्णतः समर्थन करते हैं।

eYVhiy ,Vh 'kxu ohtk feyxk] ;jkih; ;fu;u u Hkkjrh;k d ohtk fu;e cny

ub fnYyhA भारतीय अब लंबी वैधता वाले मल्टीपल एंट्री शेंगेन वीजा के लिए आवेदन कर सकते हैं।

यूरोपीय यूनियन ने भारतीयों के लिए 5 साल की वैलिडिटी वाले मल्टीपल एंट्री शेंगेन वीजा के नियमों को लागू कर दिया है। इस शेंगेन वीजा से 29 यूरोपीय देशों में जा सकेंगे।

शेंगेन वीसा 90 दिन के लिए जारी किया जाने वाला एक शॉर्ट स्टे वीसा होता है। यह वीजा किसी भी यूरोपीय देशों में स्वतंत्र रूप से यात्रा करने की अनुमति देता है।

इससे पहले तक 3 साल में दो बार वीजा लेना पड़ता था। लेकिन अब 18 अप्रैल से लागू नियम के मुताबिक भारतीयों को मल्टीपल एंट्री शेंगेन वीजा मिलेगा। इससे वीजा में लगने वाला खर्चा भी बच जाएगा। अभी अल्प प्रवास वीजा में लगभग 7 हजार रुपए लगते हैं। वहीं अमेरिका में ये 10 साल है।

इन नियमों से भारत और यूरोपीय देशों में व्यापार बढ़ेगा।

इन नियमों से भारत और यूरोपीय देशों में व्यापार बढ़ेगा।

ऐसे काम करता है

यह यह एक स्टिकर के रूप में होता है, जिसे आपके पासपोर्ट या एक यात्रा दस्तावेज पर चिपकाया जाता है। यह स्टिकर ही आपको शेंगेन राज्यों में यात्रा करने के लिए परम. िशन का प्रतीक है। आपको प्रवेश तभी दिया जाता है, जब आप शेंगेन कन्वेंशन से निर्धारित अन्य शर्तें पूरी कर लेते हैं (जैसे कि यात्रा उद्देश्य, यात्रा की शर्तें और आपके पास पर्याप्त धनराशि होना चाहिए)।

आप शेंगेन के जिस देश में जाना चाहते हैं, उस देश के वाणिज्य दूतावास में आवेदन करें। सभी शेंगेन देश घूमने के लिए भी जानकारी आपको वहीं मिलेगी। यह दूतावास आपके देश की राजधानी में स्थापित होते हैं। आप जिस देश में ज्यादा समय बिताएंगे, उसे वहां का स्थान कोड किया जाएगा।

शेंगेन वीजा नियमों के लागू होने से यूरोप में अलग–अलग देशों की कागजी कार्रवाई एक साथ हो जाएगी। अब तक शेंगेन वीजा अपनी कम वैधता के कारण भारतीय यात्रियों के लिए एक परेशानी बना रहा, जिसके लिए कई बार अलग–अलग आवेदनों की आवश्यकता होती थी।

यूरोपीय यूनियन ने कहा कि भारत में रहने वाले और अल्पकालिक शेंगेन वीजा के लिए आवेदन करने वाले भारतीय नागरिकों के लिए नई वीजा कैस्केड व्यवस्था स्थापित यात्रा करने वाले यात्रियों के लिए कई साल तक वैधता वाले वीजा तक आसान पहुंच प्रदान करेगी। अब कोई भी नागरिक एक ही वीजा से यूरोप के कोई भी देश घूम सकता है। बस पासपोर्ट वैधता अनुमति देता हो।

वीजा नियमों में बदलाव यूरोपीय यूनियन–भारत कॉमन एजेंडा के तहत किए गए है, जो दोनों के बीच व्यापक संबंधों को मजबूत करेगा।

मालदीव का संविधान बदलेंगे, संसदीय चुनाव जीतने के बाद राष्ट्रपति मुइज्जू का चीन एजेंडा

ub fnYyhA मालदीव में भारत विरा. ेधी राष्ट्रपति मोहम्मद मुइज्जू को संसदीय चुनाव में प्रचंड बहुमत के साइड इफेक्ट शुरू हो गए हैं। 93 सीटों में से मुइज्जू की पार्टी को 68 सीटें मिली हैं। अब मुइज्जू ने चीन के एजेंडे पर काम शुरू कर दिया है। उनका पहला टास्क संविधान बदलना है। अभी राष्ट्रपति के अधिकारों पर संसद का नियंत्रण है। मुइज्जू राष्ट्रपति के आदेश को मंजूरी के लिए संसद में तीन चौथाई की जगह साधारण बहुमत का प्रावधान करेंगे।

सूत्रों के मुताबिक, मुइज्जू 188 बसाहट वाले द्वीपों में से 30 नए द्वीपों में कंस्ट्रक्शन के ठेके चीनी कंपनियों को देंगे। यहां चीन की कंपनियां पहले चरण में एक हजार फ्लैट बनाएंगी। ये 30 नए द्वीप समुद्र पाट कर बनाए गए हैं। इसे लैंडरिक्लेमेशन कहा जाता है। भारत समर्थक पूर्व राष्ट्रपति मोहम्मद नशीद नए द्वीपों पर घ्निर्माण के सख्त खिलाफ थे। उन्होंने चेताया था कि जलस्तर बढने से मालद. ीववासी दुनिया के पहले पर्यावरण शरणार्थी बन सकते हैं। उन्होंने भारत, श्रीलंका या ऑस्ट्रेलिया में जमीन खरी. दने की बात कही थी। हालांकि, मुइज्जू ने सत्ता में आने के बाद लैंड रिक्लेमेशन को आगे बढ़ाया।

मालदीव पर 54,186 करोड़ रुपए का विदेशी कर्ज है। वर्ल्ड बैंक के मुता. बिक 2026 तक मालदीव को लगभग 9 हजार करोड़ का विदेशी कर्ज चुक. ाना होगा। इसके लिए घ्राष्ट्रपति मुइज्जू ने इस्लामिक बॉन्ड के जरिए 4200 करोड़घ् रुपए जुटाने का प्लान बनाया है।

इसके लिए तुर्किये और सऊदी अरब से इस्लामिक बॉन्ड खरीदे जाएंगे। मुइज्जू ने राष्ट्रपति बनने के बाद सबसे पहले तुर्किये की यात्रा की थी। इस दौरान मुइज्जू ने तुर्किये से आसान शर्तों पर कर्ज मांगा था। ऐसी ही गुजारिश वे सऊदी अरब से भी कर चुके हैं। वे कर्ज मांगने के लिए चीन भी गए थे।

मुइज्जू का भारत विरोध और चीन प्रेम और बढ़ेगाः लंदन में बसे मालदीव के पत्रकारघ् मोहम्मद इंतखाब के मुता. बिक मुइज्जू की पार्टी ने चुनाव प्रचार के दौरान भारत विरोधी रुख अपनाया। आने वाले दिनों में मुइज्जू का ने भारतीय सैनिकों के दूसरे जत्थे और आखिरी जत्थे को 10 मई तक मालदीव छोडने काघ् अल्टीमेटम दिया हुआ है।घ्

संसदीय चुनाव में भारी बहुमत से जीते मुइज्जू

मालदीव में 21 अप्रैल को संसदीय चुनाव हुए थे, जिसमें मुइज्जू की पार्टी ने जीत हासिल की। सोमवार को घोषित हुए शुरुआती नतीजों में मुइज्जू की नेशनल पीपुल्स कांग्रेस पार्टी और उनके समर्थकों को 93 में से 71 सीटें मिलीं।

राष्ट्रपति मुइज्जू की जीत पर चीन ने भी उन्हें बधाई दी थी।

दूसरी तरफ, चुनाव में भारत समर्थक पार्टी को सिर्फ 12 सीटें ही मिल सकीं। संसद में बहुमत के लिए 47 से ज्यादा सीटों की जरूरत थी।

न्यूज एजेंसी के मुताबिक मुइज्जू की जीत भारत के लिए बड़ा झटका बताया गया।

भड़काऊ बयान पर कोर्ट ने पूर्व पीएम इमरान खान को फटकारा

bLykekcknA पाकिस्तान की जेल में बंद पूर्व प्रधानमंत्री इमरान खान की मुश्किलें खत्म होने का नाम नहीं ले रहीं। अब इस्लामाबाद की एक अदालत ने गुरुवार को इमरान खान और उनकी पत्नी बुशरा बीबी को पाकिस्तानी सेना और बाकी संस्थानों के खिलाफ भड़काऊ बयान देने पर रोक लगाई है।

एक याचिका पर सुनवाई करते हुए न्यायाधीश बसीर जावेद राणा ने कहा कि मीडिया को कोर्ट की सुनवाइयों को लेकर एक सीमा के अंतर्गत रिपोर्ट्स तैयार करनी चाहिए और आरोपियों के बयानों पर किसी तरह की रिपोर्ट नहीं बनानी चाहिए।

अदालत के आदेश के अनुसार पाकिस्तान तहरीक–ए–इंसाफ (पीटीआई) पार्टी द्वारा सेना के उच्च अधिकारियों, न्यायपालिका और सेनाध्यक्ष को लेकर भड़काऊ बयान दिए गए हैं।

कोर्ट ने इमरान और उनकी पार्टी को फटकार लगाते हुए कहा है कि इस तरह के बयान न्यायिक मर्यादा को बाधित करते हैं और न्यायिक कार्यों में भी बाधा डालते हैं। आगे कहा गया है कि इमरान खान के जेल मुकदमे के दौरान मीडिया द्वारा अपनी रिपोर्टिंग को सीमित रखा जाएगा।

एक खबर के अनुसार, अदालत ने अपने आदेश में अभियोजन पक्ष, आरो. पियों और उनके बचाव पक्ष के वकीलों को निर्देश दिया कि वे ऐसे भड़काऊ बयान न दें जिससे अदालत की मर्यादा भंग हो।

पंजाब पुलिस पर भी लगाया था आरोप।

इससे पहले पूर्व प्रधानमंत्री इमरान खान ने पंजाब पुलिस पर भी धांधली का आरोप लगाया था।

उन्होंने कहा कि पंजाब में उपचुनाव को प्रभावित करने के लिए पहले से धांधली की रणनीति तय की गई थी। उन्होंने यह भी कहा कि इसे लेकर सुप्रीम कोर्ट में भी हमारी याचिका को अनसुना किया गया।

उधर पाकिस्तान के रक्षा मंत्री ख्वाजा आसिफ द्वारा इमरान खान के करीबी गोहर खान के दावों को सिरे से नकार दिया गया है। गोहर खान ने दावा किया था कि जेल में बंद पूर्व प्रधानमंत्री पर एक सौदा स्वीकार करने के लिए दबाव बनाया जा रहा था, इसके जवाब में रक्षा मंत्री ने कहा कि इन दावों में कोई सच्चाई नहीं है। गोहर ने कहा कि जिस तरह से इमरान खान और उनकी पत्नी बुशरा बीबी को जेल में रखा गया है।

उससे पता चलता है कि दोनों पर किसी सौदे के लिए सहमति जताने के लिए दबाव डाला जा रहा है।

गोहर के बयान के जवाब में रक्षा मंत्री ख्वाजा आसिफ ने कहा कि इमरान खान की पार्टी सिर्फ खबरों में बने रहने के लिए ऐसे बयान दे रही है।

बता दें कि अप्रैल 2022 में अविश्वास प्रस्ताव में सत्ता से हटने के बाद से इमरान खान को चार मामलों में दोषी ठहराया गया है।

इसके बाद उन्हें रावलपिंडी की अदियाला जेल में रखा गया है।

p
स्वामी,सम्पादक,प्रकाशक व मुद्रकः संतोष कुमार शुष्टा, आकाश व्यू, छकड़ायल रोड, कमला नगर, संजौली शिमला हि0 प्र0 – 171006 से प्रकाशित तथा सिग्मा प्रिंटर बलॉक न.6,शॉप न.170 एसडीए कॉम्पलेक्स कसुम्पटी शिमला से मुद्रित। किसी भी वाद विवाद का न्याय क्षेत्र शिमला ही मान्य होगा। मोबाईलः 09418453928,9805192400 e-mail: aapkasaamna@gmail.com